दोहा—भाति भांति के अर्थ बहु, यामें गूढ अगूढ
याहिपढेगुणरीतिकों,मग समुझतमतिमूढ ।।

सो॰—जानहिं चतुर सुजान, शुभ इच्छा मेरी यहै
यहअभिलाषनआन, ग्रंथप्रसिद्धीहोययहै।। १०

दोहा—उमा शंभु पद आसरा, गणपतिको शिरनाय
करों ग्रन्थ प्रारंभ अब, भाषा सरल सुभाय ।। ११

गोमाताकी स्तुति (राग–भैरवी ताल–पंजाबी.)

जयजयजयजननीगोमाई,-जगजननी गोमाई—आस्ताई।। दुःखदलनसुखकरनहेतु सुतपीरहरनभवआई ।। जय॰ ।। देवदनुजगंधर्वनागनर, विदितसबहिप्रभुताई ।। जय॰।। उदधिसुतापतिहरबिरंचि नित बन्दित पदमनलाई ।। जय॰ ।। धरतपयोधितुर्यतनमण्डल देतदुग्धअधिकाई।। जय॰ ।।
दिक तुवतनुजनसुखदाई ।। जय॰ ।।
के काजक्षीरदे, चरतआपतृणधोई ।। जय॰ ।।
निमातनेहतवनिरखत, कहतशेषसकुचाई ।। जय॰
ाकहँपावनजानिदयानिधि, आपशुपालकहाई
ाकताहितुमहुनितसेवहु भवमलसकलबहाई ।ज॰

राग जिला ठुमरी.

सकलपदारथमिलैंउन्हैं जोकरतसदागौपूजनकों नेत॰ ।। आस्ताई ।। उठप्रातसमयमनमगन

होय, अति आदरसों जो चरणधोय, सुरभीपदमें जो लगन होय, को पायदेव दर्शनकों ॥ नित० ॥ नव रुचिर कुसुम मालाबनाय, बहु सुगंध चंदन स्रग जुटाय, करपूर धूप नैवेद्य लाय, आरति उतार लै चरणनकों ॥ नित० ॥ करजुगलजोर जो गुणन टेर, चिंतत फल मांगे बेर बेर, पुनि मिलत लगे नाहिं नेकदेर, सेवकन हरषित भक्तनकों ॥ नित० ॥ २ ॥

राग झिंझोटी.

धन धन भारतकी हितगैया। अन्न खियावैं दूधपियावैं ज्योंबालककों मैया॥मही मलाई माखन खोवा दहिया तक्र खवैया ॥ बहुबिधि काज सहायक सुत जनि जगकों सुख करवैया ॥ चांवल मूंग गहूँ यव ऊखरु उरद आदि उपजैया ॥ सब पकवान दोराजकों सज सज आप घास चरवैया ॥ रोग शोककों सहज मिटावति जनमनकों हुलसैया ॥ यहि सोकारनसें देव मुनिन ऋषि मानत कृष्ण कन्हैया ॥ याबिन और कोऊ नहिं जगमें भौसागरकी नैया ॥ सुन सेवक याहीके कारण घर घर बजत बधैया ॥ धन धन भारतकी हित गैया० ॥ ३ ॥

दोहा—ग्रीवा हरि मुख हर बसे, प्रष्टे अज बिच देव ॥
रोम रोम प्रति मुनि बसे, कोपावत गौ भेव॥१॥

सूर्य शशी दोउ नेत्रहैं, नागा पुच्छ हजार ॥
शैल सकल खुरमें रहैं, गंगामूत्र मंझार ॥ २ ॥
यहां धेनुके तनबिषें, रहैं देव सब छाय ॥
सो महात्म कैसे कथैं, व्यासादिक मुनिगाय ॥ ३ ॥
भानूदुहिता है सही, धरा रूप है खास ॥
श्रेयकाज ऋतु कारणें, पूजतहै जगतास ॥ ४ ॥
द्विज अरु गो तनु एक हैं, कुलजु जुदे बिधिकीन्ह
हविष्यान्न गो तें प्रगट, मंत्र द्विजनको दीन्ह ॥ ५ ॥
यज्ञ कार्य गो बिन नहीं, गौ तें बेद पुरान ॥
देव सकल गौ के विषें, गऊ स्वर्गकी खान ॥ ६ ॥
नमैं धेनुमाता तुह्मैं, श्रीमति सुरभी माय ॥
ब्रह्मसुता तुमकों नमों, करिये जननि सहाय ॥ ७ ॥
सर्व पवित्रनमें सिरै, गऊ जो मङ्गलरूप ॥
स्वर्ग चढत सो पानसी, व्यास कहै सुनु भूप ॥ ८ ॥
गऊ गऊ निसदिन रटैं, प्रात लेत गउ नाम ॥
ता सज्जन सिरताजपैं, रहैं न जम सें काम ॥ ९ ॥

हे त्रितापनाशिनी मातेश्वरी ! तुझे बारंबार नमस्कार है । हे कलिकलुषहारिणी ! गोमाता संसारमें तेरी कृपा कटाक्षके बिना, कोईभी कार्य नहीं हो सक्ता, तभीतो उस भक्त भय हारी, दुष्टदल संहारी, गोद्विज हितकारी, मुरारी ने, चोरासी

लक्ष योनियोंसें तुझे सर्वोपरी बनाईहै; पर हे ? नरक निवारिणी माता ! बडाही शोकका विषय है कि, आंजकल इस दुष्ट कलिकालके समय में बहुतसे मनुष्योंके हृदयमें तूं एक साधारण पशुवत्। होगईहै, इसीलियेमैं तेरीकृपा कटाक्षका अवलंबन करके एक छोटीसी पुस्तकद्वारा तेरे महात्मकाप्रकाश करता-हूं।इसवास्ते कि लोगोंके हृदयमें तेरी भक्तिरूपी वृक्ष जो कि समय के प्रवाहसे मुरझा रहाहै, वह पुनः पत्र पुष्प फलयुक्तहोके प्रफुल्लित हो। हे सज्जन महाशयों ! यदि आप धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि चारों पदार्थोंको हस्तगत करना चाहते हैं, यदि आपको दैहिक, दैविक और भौत्तिक्र त्रिताप दूर करनेकी इच्छा है, यदि आप सनातनधर्म रूपी अमृत फलका रसास्वाद लेना चाहते हो, और इस लोक में असंख्य द्रव्य तथा पुत्र कलत्र आदि का पूर्ण सुख भोगकर संसारसागरसें उत्तीर्ण होनेकी इच्छा रखते हो, तो तन मन धन द्वारा गोमाताजीकी सेवा करिये। श्रीगोमाताजीकी सेवा करनेसे ब्रह्मा, बिष्णु और महादेवजीके अतिरिक्त जितने देवी देवताहैं वहभी प्रसन्न होकर आपका अभीष्ट सिद्धकरने में तनिकभी बिलंबनहींकरैंगे । यह आप कदापि नहीं समझैं कि गऊको दियाहुवा अन्न देवताओंको किस प्रकार सें प्राप्त होगा ? परंतु हे महाशयो ! जिसप्रकार मनुष्य भोजन करताहै और वह पदार्थ प्रथम उदर (पेटमें) जाकर नाड़ियों द्वारा

प्रथक प्रथक बिभागसे सर्व देहके प्रत्येकस्थानोंमें प्रवेशहोकर सारी इन्द्रियोंको अपने२ कार्यमें प्रवर्त करनेकी शक्तिदी है । उसीप्रकारसेजो गोमाताजीको दियाहुवाभोजनभी सर्वदेवताओंके प्रतिजावेगा, क्योंकि जितने तेतीसक्रोड देवी देवता हैं वे तो सर्व श्री गोमाताजीके शरीरमें निवास करते हैं, इस प्रकारके बचन शास्त्रोंमें कहा है । सो नीचें प्रमाण देखिये

श्री गो माताजीके इसपवित्रशरीरमें किस किस स्थानमें कोन कोनसे देवता निवास करते हैं सोदरसातेहैं ।

श्लोकः—पृष्टे ब्रह्मा गले विष्णुर्मुखे रुद्रःप्रतिष्ठितः

मध्ये देव गणाः सर्वे रोम कूपे महर्षयः ॥१॥
नागाः पुच्छे खुराग्रेषु ये चाष्टो कुलपर्वताः
मूत्रे गङ्गादयो नद्यो नेत्रयोः शशिभास्करौ॥२॥
एते यस्य स्तनौ देवाः सा धेनुर्वरदास्तु मे ॥
वर्णितंधेनुमाहात्म्यं व्यासेनश्रीमतात्विदम्॥३॥

भाषार्थ—पीठमें ब्रह्माजी,बास करतेहैं,गलेमें विष्णुजी,मुखमें त्रिनेत्र रुद्रजी और मध्यस्था अर्थात् पेटमें सर्वदेवताबास करतेहैं.ओररोमरोममेंनारद,व्यास,पाराशर,वसिष्ट, भरद्वाज, विश्वामित्र,सनक,सनंदन, सनातन, सनत्कुमारआदि तपोधन महर्षीगण बास करते हैं पुच्छमें नागदेवता, चारोंखुरोंमें पर्वत मूत्रमें गंगादि नदियां ओर एकनेत्रमें सूर्य ओर दूसरेमें चन्द्रमा

बास करते हैं। ऐसा श्रीविष्णुरूपी वेदव्यासभगवानका बचनहै । हे प्रियपाठकगणों ! आप इस श्लोकको पढकर स्वयं अनुमान करलेवैंगे कि श्रीगोमाताजीका शरीर कैसा पवित्र और उत्तमहै, कि जहां ब्रह्मा विष्णु महादेवजीको आदि लेकर सर्व देवता नित्यप्रति निवास करते हैं। तो फिर इस मातेश्वरीकी प्रशंसा करना मन और लेखिनीकीसक्ति से बाहरहैं । इसत्रिलोकतारिणीमाताजीका महात्मरूपी अमृत आपकों कर्णपुटद्वारापान करानेमें मेरी स्थिति इससमय जैसे गूंगे मनुष्यके समानहैं, कि जिसकों क्षीर आदि मिष्ट भोजन कराके उसके स्वादके बिषयमें पूछा जावे तो वह क्या कह सक्ताहै ? अर्थात् कुछ नहीं कहसक्ता । परन्तु नीति कारोंका कथनहैं कि मनुष्यको श्रेय कार्य करनेमें कदापि हताश न होना चाहिये. यहांपर कुछ वेद मन्त्रोंद्वारा श्रीगोमाताजीका महातम दरसाते हैं, सो आपएंकाग्र चित्त पूर्वकपढैं

सामवेद

यदिन्द्राहं यथात्वमीशीयवस्वएक इत । स्तोतामे गोसखास्यात् ॥ शिक्षीयमस्मै दित्सेय ॐ शचीपते मनीषिणे यदहं गोपतिःस्याम् । धेनुष्ट इन्द्रसूनृता यजमानायसुन्वेते ॥ गामश्वं विप्यषीदुहे॥छ०उ०सं० प्र० ११ मं० ८

भाषार्थ—हे इन्द्र,यदि हमकों आप सामर्थदेंतो हमओर

अपने अनुगामियोंसें गोरक्षाकरवावें ।

यजुर्वेद.

नमो व्रज्याय च गोष्ठ्याय च नमस्तल्प्याय च गेह्याय च नमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च ॥ अध्याय ॥ १५ ॥ मं ४४

भाषार्थ—जो मनुष्यमेघसेउत्पन्न हुई वर्षा ओर वर्षा से उत्पन्नहुवात्रणआदिकी रक्षासें गो आदि पशुओकों बढावेंगे वे पुष्कल भोगोंको प्राप्ति होवेंगे । यहां कुछेकप्रमाण गोमाता की सेवाकरनेमेंपूर्णपुष्टिकारक देतेहैं यह प्रमाण महाभारत, पद्मपुराण, ब्रह्मपुराण, भागवतपुराण, शिवपुराणआदिग्रंथोंकेहैं

भविष्यपुराण ।

तीर्थस्नाने तु यत्पुण्यं यत्पुण्यं विप्रभोजने । यत्पुण्यं च महादाने यत्पुण्यं हरिसेवने ॥ १ ॥ सर्वव्रतोपवासेषु सर्वेष्वेव तपस्सु च । भुवि पर्यटने यत्तु सत्य वाक्येषु यद्भवेत् ॥ २ ॥ यत्पुण्यं सर्व यज्ञेषु प्रायश्चित्तानि शुध्यति । सर्वे देवा गवामंगे तीर्थानि तत्पदेषु च ॥ ३ ॥

भाषार्थ—तीर्थ स्नानकरनेका जो पुन्य, ब्राह्मण भोजन करानेका जो पुन्य, हरि सेवनकरनेमें जोपुन्य, महादान देनेका जो पुन्य, सर्वव्रत व उपवास करनेका जोपुन्य, सर्व तपश्चर्या करनेका जो पुन्य, सत्य भाषणकरनेका जो पुन्य, सर्वभूमि

पर्यंटन करनेका जो पुन्य सर्व महायज्ञोंके करनेका जो पुन्य होताहै, सो पुन्य केवल श्रीगोमाताजीकी सेवाकरनेसे प्राप्त हो सक्ताहै क्योंकि जितने देवता व तीर्थराज व ऋषी महर्षि तो सर्वकाल इस माताजीके शरीरमें निवास करतेहैं, सो इस विषयका शास्त्रीयप्रमाण आप प्रथम देख आयेहैं? फिरभी देखिये.

महाभारत

गाश्च शुश्रूषते यश्च, समं वेत्ति च सर्वशः ॥
तस्मै तुष्टाः प्रयच्छन्ति, वरानपि सु दुर्लभान् ॥

भाषार्थः—श्री भीष्मपितामह धर्मपुत्र महाराज श्री युधिष्ठिरजीसे कहतेहै कि हे राजन्! जो पुरुष गौओंकी तृण, जल आदिसे सेवा करैं, और सर्वत्र समदृष्टि रक्खे उस पुरुषके अर्थ गौएं संतुष्ट होकर दुर्लभ वरको देतीहै"।

शिवपुराण

ये गोब्राह्मणकन्यानां स्वामिमित्रतपस्विनाम् ॥
विनाशयन्ति कार्याणि ते नराः नारकाः स्मृताः ॥

भाषार्थः—शिवपुराणमें श्रीमहादेवजी कहतेहैं कि "जो नर गो, ब्राह्मण, कन्या, स्वामि, मित्र, तपस्वी इनके कार्यमें कुछभी विघ्न करता है, वह घोर नर्कमे गिरता है"।

हे प्रिय वाचकवृन्दो! उपरोक्त दो श्लोक जो आपने देखे हैं वे महाभारत और शिवपुराणकेहै। और इन दोनोंमें पराई (दुसरेकी) गायको तृण जल आदिसे सेवा करनेमें कितना

पुण्य होताहै, और गायके कार्यमें विघ्न करनेवाले को कितना पाप होता है, इसके विषय में यह बचन हैं। अब मैं ऊपरोक्त दोनोंश्लोकोंकाही पूर्णरूपसे पुष्टिकारक एकइतिहासलिखताहूँ.

" किसी एक स्थानपर कथा बँच रहीथी, और जिससमय यह प्रसङ्ग आया, कि यदि कोई मनुष्य श्रीगङ्गाजी की सौ कावड (काष्टकी बनी रहती है जिसके दोनोंतरफ जल रखने सरीखा स्थान रहताहै) लाके श्रीसेतुबंधरामेश्वरके ऊपर चढावे तो उसको कैलाशमें बासमिलै। उसी समय एकसात्विक ब्राह्मण (जो कथा सुन रहा था) ने यह कार्य अपने मनमें स्थिरकिया, और उसी समय कावड श्रीगंगाजीसे भर भरकर लाना, और श्रीरामेश्वरपर अभिषेक करना प्रारंभ किया, इस प्रकार करतेकरते श्रीशङ्करकी कृपासे और अपने दृढ विश्वास और पूर्ण परिश्रमसे नन्यान्वे (९९) कावडें तो लाकर श्रीशङ्करके समर्पणकर चुका, और सौवीं कावड भरकर लाताथा कि मार्गमें एक गाय मिली जोतृषाके मारे अत्यन्तही व्याकुल होरहीथी उस ब्राह्मणकी तरफ भाँ भाँ करके तृषायुक्त होनेका पूर्ण परिचय अपनी बाणी या चेष्टा द्वारा दिखाया,वह ब्राह्मण भी उत्तम वर्ण, सात्विक स्वभाव और भगवत कथाका श्रवणके प्रभावसे उस गौका हार्द्रिक अभिप्राय स्पष्टतासे समझगया यही नहीं वरन वह दया रूपी समुद्र में निमग्न हो गया, और ईश्वर का नाम लेकर वह सारी कावड श्रीगोमाताजी को पिला

दी, प्रिय पाठकगण ! इस ब्राह्मणकी दयामया कितनी सराह ने योग्य हैं जो कितने परिश्रम से कावड लायाथा ? पर श्रीगो माता को ऐसी स्थिति में देख गंगाजल सब पिला दिया, और आप सौंवीं कावड पीछी लाने के अर्थ श्रीगंगोत्री की ओर प्र- स्थान करनेलगा इतनेहीमें परमदयालु भक्तभयहारी श्रीशङ्कर रामेश्वर महाराज वहां ही प्रगट हुए सचहै कहा है ।

क०—" श्रेष्ठ गुण ज्ञान जाके कंठ वेद बानी अस,
भवन में भवानी सुख संपति रहा करै ।
कालकूट कंठ जाके चन्द्रमा ललाट जाके,
वासुकि सो दास जा के दारुण दहा करै ॥
चार वेद बंदि जाके द्वारपाल नन्दी गण,
बरुण कुबेर यमराज हू रहा करै ।
जगत रिसाय यमराज की कहा वसाय,
शङ्कर सहाय तो भयङ्कर कहा करै ॥ १ ॥

उस ब्राह्मणपर शंकर प्रसन्न होकर बोले हे ब्राह्मण ! मैं तेरे पर अत्यन्तही प्रसन्नहुवा हूं ! धन्यहैं तेरे माता पिताकों और तुझको, " वरंब्रूहीं" (अर्थात् वरदान जो मांगना हो सों मांग) ब्राह्मण हाथ जोडके स्तुति करने लगा, और पश्चात् बोला कि " हे भगवान् ! यदि आप मेरे ऊपर प्रसन्न हुये हैं तो मेरा यही इच्छित वर मांगना है कि मुझे कैलासबास होवे" तब श्रीचन्द्रमौलि वृषकेतूने कहा कि अब तूं निश्चिन्त होकर

अपने स्थानकोजा, तुझे कैलास अवश्यमेव होजावेगा ।

हे प्रिय पाठकगणों! आपने प्रथम श्लोक जो गोमाताको जल तृण देनेके विषयमें महाभारतका पढाहै, उसी बिषयका यह प्राचीन इतिहास कितना पुष्टि कारक है, यह स्वयं अनुमान कर सकते हैं । एक प्यासी गौको तृप्त करनेसे कैलास प्राप्त हुवाहै, और श्रीशङ्करने दर्शन देके उस दुर्बल ब्राह्मणके मन कमलको किसप्रकार प्रफुल्लित कियाहै और इच्छित बरसे वञ्चित नहीं रक्खा है तो जो लोग गौमाताकी रक्षा और तृण जलादिकसे सेवा करते होंगे उनके ऐहिक और पारमार्थिक मनोवाञ्छित कामनाएं पूर्णहो इसमें क्या आश्चर्य्य है । हे सनातन धर्मावलम्बियो ? बोलो एकवार"श्रीगोमाताकीजय" ।

अब उसी ब्राह्मणका कुछ वृत्तान्त पुनः लिखता हूं जो मार्गमें कुछ घटना हुई थी ।

जब वह ब्राह्मण अभिलाषित वर पाकर अपने स्थानको जाने लगा, तब थोडी दूर जानेके अनन्तरही एक विचित्र घटना हुई, कि जिसके लिखते हुए, लेखनी और हृदय दोनों ही कंपायमान होते हैं, पर इस कथाका पूरा वृत्तान्त पाठक गणोंको विदित कराना अत्यावश्यक समझकर विस्तार पूर्वक लिखा जाताहै, सो वह यह है कि जिस मार्गसे ब्राह्मण जा रहाथा; उसके निकटहीं एक सहरथा जिसमें एक साहूकार रहताथा जिसके इकलौती कन्याथी, और वह उसपर पुत्रसे

भी अधिक प्रेम रखताथा। यहांतक कि उसके रहनेके वास्ते अलगस्थान बनादिया था। उस साहूकारका जामात अर्थात् जमाई अपनी स्त्रीको लेनेके निमित्त आया था वेहे दंपति (स्त्री पुरुष) शयन स्थानमें गये तो उस दुष्टा कुटिला स्त्रीने अपने जारकी सम्मति लेके अपने प्रिय पतिके प्राणोंको यमालयको भेजदिया। क्योंकि वह (शेठका जामातु)मार्गका थका हुवाथा सो अचेत सोयाथा, तब उसका सिर काटलिया और अपने बचावके अर्थ कोई उपाय सोचनेलगी। इतनेमें उस महलके नीचे होकर वोही भोला भाला गरीब ब्राह्मण जा निकला उस स्त्रीने उस ब्राह्मणको पकडलिया और चिल्लाने लगी कि अरे दुष्ट ! मैंने तेरा क्या अपराध किया जो तूने अचानक मेरे पतिको मारडाला. केवल आभूषणोंहीके लेनेकी इच्छाथी तो मैं तुझे ऐसेही सर्व आभूषण उतार देती"। इस प्रकारके अनेक छल उस दुष्टाने रो रो कर तिरिया चरित्र आरंभ करादिया। उस समय उस स्त्रीके माता पिता और बहुतसे मनुष्य वहां एकत्रित होगये, और बिचारे निरपराधी ब्राह्मणको मार पीट करनेंके पश्चात् राज्यमें ले गये। तब उस ब्राह्मणसे राजकर्मचारियोंने इस विषयके इसप्रकारसें प्रश्न किये।

अरे ब्राह्मण ! क्या इस दुष्ट कर्मका कर्ता तूं है? तब वह ब्राह्मण नम्रता पूर्वक अपनी प्राचीन कथा समग्र कहनेलगा। और उनके प्रश्नके उत्तरमें यह कहा कि हे पृथिवीनाथ ! यह

नीचकर्म मेरेही द्वारा हुवाहै, या और किसीके सो तो इसबात-को वह परमात्माही जानताहै । जो कि मनुष्योंके भले बुरे क-र्मोंको भली प्रकारसे वो अंतर्यामि देख रहाहै । ऐसा कह कर बिचारा वोही ब्राह्मण रोने लगा । न्यायाधीश जो वास्तवमें न्याय मूर्ति थे, वो इस विषयकी पूरी२ जांच करनेके उपरान्त बोले कि " हे साहूकार ! यद्यपि आपके जामातका मारनेवाला यहीहो? किन्तु मेरे हृदयमें तो ऐसा बिश्वास कदापि नहींहोता कि यह काम केवल इसी मनुष्य द्वारा हुवाहो । तथापि न्याय-मार्गद्वारा यह ब्राह्मण जरूर शिक्षा देने योग्यहै. इसमें कोई सन्देहनहीं क्योंकि साक्षियोंके द्वारा यह बात प्रमाणितहोगई है" अतएव उन्होंने उस ब्राह्मणको ब्राह्मण शरीर समझके प्रा णान्त शिक्षा न देके केवल उसके दोनों हाथही कटवा दिये ।

हे प्रिय पाठको ! जिस समय उस निरपराधी ब्राह्मणके दोनों हाथ कटे होंगे, उस समय उसको कितनी मानसिक और दैहिक वेदना हुई होगी ? इस बातका लिखना लेखनी और लेखक दोनोंहीकी शक्तिसे बाहर है । जिससमय उसके दोनों हाथ काटदिये गये, तब वह बिचारा रोता गिरता पडता थोडीही दूरगया कि उसने वहांपर एक शिवालय देखा और शिवालयमें जाकर, शिवजीकी बहुतसे कटु बचनोंसे स्तुति कर, बोला कि हे नाथ ! मैंने आपका क्या अपराध कियाथा, जिससे आपने मेरी ऐसी कुगति कराई " अन्तमें उस ब्रा-

ह्मणने अपने प्राणोंको शिवालयहीमें परित्याग करना उचित समझकर बैठगया, थोडीही देरमें परमदयालु श्रीशंकरने उसे शोक सागरमें डूबाहुवा देख सहसा मूर्तिमान प्रकटहुए। और बोले "अरे विप्र! क्यों शीघ्रता करताहै मैं कहताहूं सो एकाग्रचित्तसे सुन, इसजन्मके प्रथम किसी जन्ममें तैनें श्रीगोमाताजीका अपराध कियाथा, वह (अपराध) यह था कि किसी स्थानपर पांच दश मनुष्य बैठेहुए कोई गोमाताजीके उपकारार्थ परामर्श कर रहेथे सो तूने जाकर उस कार्यमें विघ्न डाला, सो यदि अभी तुझे कैलासबास हो जावे तो जो गोमाताका तैने अपराध किया है वो क्या तेरे बदले मैं भोगूंगा; अभी गोमाताके ऊपर तनिक उपकार (जल पिलाकर)कर उसका फल तय्यार होगया, उसका कुछ विचारही नहीं। हां यदि इस जन्ममें उस पापका फल भोग लेगा तो अवश्यमेव तुझे कैलास प्राप्त होवेगा"। इसप्रकार श्रीशंकर उसका समाधानकर अन्तर्ध्यान हुए और वह ब्राह्मणभी अपने स्थानपर जाके पूर्वजन्मोपार्जित पापकर्मको भोगकर अन्तमें कैलासको प्राप्तहुआ, जहां बडे२ योगीजनोंकाभी प्रवेशहोना कठिनहै।

हे प्रिय पाठकगण! आप देखिये कि मनुष्य महापापसेभी मुक्त हो जाता है, परन्तु जब उस ब्राह्मणने कोई जन्ममें गौके कार्यमें बाधा डाली तो उसको इतना दुख भोगना पडा। आपका दूसरा श्लोक जो शिवपुराणका गोमाताके अपराधके

बिषममेंथा, उसके लियेभी यही इतिहास कितना पुष्टिकारक है आप स्वयं अनुमान करलेंगे। अब कृपाकर आगे चलिये आपको गोमहात्मकी कथारूपी अमृतपान कराने में मेरी तृप्ति नहीं होती ।

ब्रह्मपुराण ।

एवं कृते महीं पूर्णां रत्नैर्दत्त्वा फलं लभेत् ॥
गोप्रदानेन यत्पुण्यं गवां संरक्षणाद्भवेत् ॥

भाषार्थः—अनाथ गो अर्थात् बे वारसी (बिनाधनी) गोके शीतकालमें बचावके लिये जो मकान बनादेतेहैं, और दाना, चारा, पानीसे गोमाताजीकीसेवा करतेहैं, और जो शीतकालमें गौओंको धूनीसे तपातेहैं, वा उन्हें वस्त्र उढातेहैं वे रत्नोंसे परिपूर्ण सम्पूर्ण पृथ्वीके दानके तुल्य पुण्यके फलको पातेहै और गोदानकापुण्य उनको गोसेवासे मिलताहैं । औरभी देखिये—

महाभारत ।

कृत्वा गवार्थे शरणं, सीत वातक्षमं महत् ॥
आसप्तमं तारयति, कुलं भरत सत्तम ॥

भाषार्थः—हे भरत ! जो शीत, उष्ण, वायूके बचाने योग्य गोशाला बनवातेहैं, वह अपने छै सात पुरुषको तारतेहैं । यह सत्य है ।

शङ्का—क्यों जी यदि किसी मनुष्यकी गोशाला बनानेकी सामर्थ्य न हुई तो उसको क्या करना चाहिये ? उत्तर। देखो भाई ! प्रथम तो मनुष्योंको उचित है कि जहांतक होसके अ-

नाथ गौओंके वास्ते कोई स्थान अर्थात् गौशाला बनाना चाहिये। आप जरा सोचिये तो सही; कि धनाढ्य पुरुष बिवाह, स्वजातिभोजन, वेश्या नृत्य, महफिल आतिशबाजीमें भी तो सहस्रों रुपैये स्वाहा (खर्च) कर देते हैं केवल एक साधारण कीर्ति सम्पादन करनेके वास्ते, उनको इस बातके कहलानेका बडा उत्साह रहताहै कि शहरमें मनुष्य हमारी प्रशंसा करैं, कि देखो। अमुक सेठके पुत्रके बिवाहमें दिल्ली लखनऊ आदि शहरोंके पांच तवायफे इकठेहुए। अहा हा हा ! क्या कहना बहुतही उत्तम नाच और गानाहुवा. बस ऐसी मिथ्या प्रशंसा खुशामदियोंके मुखसे सुनकर फूलकर कुप्पे हो जातेहैं, और श्रीमान पण्डित जगतनारायणजीके निम्न लिखित बाक्योंको चरितार्थ नहीं करतेहैं।

दोहा—रांड भांडको तुर्तही, देवे लाख हजार।
गोहित चन्दाके लिये, भागत है ज्यों स्यार॥ १॥

चौपाई—वेश्या तुरकन को धन देवे। यही बडाई जग में लेवे॥ १॥ फुलवारी अरु आतशबाजी। फूंकै द्रव्य होय कर राजी॥ २॥ गउ सभा से जी उचकावे। मुजरा होय तुरत वहां जावे॥ ३॥ नृत्य समाज स्वांग अरु मेला। देखन जाय बनें अलबेला॥ ४॥

और यह बात उनके हृदयमें अच्छी तरहसे समाजाती

है कि ऐसा करनेसे लौकिकमें हमारा बडा यश होगा। परन्तु इस बातका उन्हें बिचार नहीं है कि वेश्यानाच और स्वजाती भोजनका यश केवल दश पांच दिनही रहेगा जोकी?जबतक यह कार्य प्रचलित रहेगा। परन्तु श्री गौमाताजीके निमित्त गोशाला आदि बनानेमें इस लोकही में नहीं किन्तु परलोकमें भी उस मनुष्यका अक्षय पुण्य निरन्तर बना रहैगा। दूसरा आप कहतेहैं कि कोई गरीबआदमीहुवा और स्वयं द्रव्य खर्च करके गोशाला आदि नहीं बना सकता सो भाई! मैंने प्रायः देखाहै कि इस माताजीके उपकारकेवास्ते साधारण स्थितिके ही पुरुष उद्योग कर करके मनुष्य शरीरके उत्पन्न होनेका स्वार्थ सिद्ध करलेते हैं।

हे प्रिय पाठको! मेरे उपरोक्त कथनको चरितार्थ करनेवाले भारतमें अबभी सैंकडों मनुष्यहैं, तथापि उदाहरण स्वरूप मैं आपको एक ऐसे व्यक्तिका नाम बताकर कृतकृत्य करताहूं कि जिसने गो माताजीकी असाधारण सेवाका परिचय दे गोभक्तोंको मोहित किया और थोडेही दिनोंसे गो लोकको सिधाराहै। यदि कोई महाशय यह शङ्का करैं कि तुम्हे क्या मालुम कि वह गोलोकमें गया या और कहीं? तो इसका समाधान यहहै कि आपने कईवार डाकघरोंमें तथा बेंकोमें हजारों रुपैये जमा कराये होंगे- और वहांसे आपको बदलेमें छोटासा पुरजा मिलताहै। वह प्राप्ति सूचक अर्थात्

" दस्तावेज " कहलाताहै तो हे प्रियवरों ! जब आपको छोटेसे कागजहीके देखनेसे बिश्वास होजाताहै और यह प्रतीति रहतीहै कि जब हम चाहेंगे तबही व्याज सहित हमारी जम्मा ले लेंगे। तो गोमाताजीकी सेवा करनेसे गोलोक प्राप्ति हो इसमें क्या आश्चर्य है. क्योंकि अपने वेद पुराण उपनिषद आदि महान धर्मग्रन्थोंके असंख्य प्रमाणरूपी रसीदें, किंवा दस्तावेजें विद्यमानहै, और हम समग्र सत्य सनातन धर्मावलम्बी उनको सत्य जानते और विश्वास रखतेहैं, तो फिर हमें यह बात अवश्य स्वीकार कर मुक्तकंठसे कहना पडैगा कि, गौ भक्तोंको निरन्तर गोलोकही मिलताहै। इसमें अणूंमात्रभी सन्देह नहींहैं। उपरोक्त महानुभाव प्रातःस्मरणीय नाम "रामप्रतापजी भरथिया " है और उन्होंकी जन्मभूमि उहांहै कि जहां गोभक्तोंके लिये यह पुस्तक भेट करनेको गोभक्त दर्शनाभिलाषीने जिस जन्म भूमिमें जन्म धारण कियाहै उसी देशमें (रामप्रतापजी) इन्होंका जन्महै। इसी कारणसे मेरा उनके साथ साधारण परिचय था, उन्होंने अपने उद्योग और पुरुषार्थ द्वारा सहस्रों रुपैये इकठे कर वहांपर (बिसाऊ प्रांत जयपुर) एक पक्की गोशाला बनवाईहै जिसमें सैंकडों अनाथ, लूली, लंगडी, बूढी, गौओंका अत्युत्तमताके साथ पालन पोषण होताहै। यह कार्य उस सर्व शक्तिमान करुणा वरुणालयकी कृपासे आजदिनपर्यन्त उन्नतिके साथ चलता

रहकर, इस भारतवर्षकी वसुन्धरा रत्नगर्भा नामक पुण्यभूमि को स्मरणकरताहै,कि थोडेसे समयके पूर्व ऐसे पुण्यमय कार्य होना एक साधारण बात थी। परन्तु हाय! आजकालकी कुटिल गतिके प्रभावसे इस स्वर्ग सोपान(निसेनी)की विजय पताका गोमाताजीकी सेवा अर्थात् गोशाला, और व्यापार पर गो कर (टेक्स) लगाना और इस कार्यमें चन्दा देना आटेमें लूणके समानही रहगयाहै।

हे चतुर हृदयपाठको! ऐसे पुरुषोंको और उनके माता पिताओंको धन्यहै, और वेही स्तुतिके पात्र होतेहैं कि जिनका जीवन समयका विशेष भाग इस माताजीकी सेवामें व्यय होताहै। नहीं तो इस मनुष्य शरीरके जन्मलेनेका परिणामकेवल इस कालचक्रकी धुरीमें इधर उधर लौटनाही होताहै। दूसरा यदि कोई मनुष्य गोमाताजीके निमित्त चंदा उघानेमेंभीसमर्थ न हो तो उसे अपनी दुकानमें या घरमें एक लोहेकी तथा काष्टकी पेटी(संदूक)जिसके ऊपर केवल एकही छिद्रहो, जिसमें रुपैया,पैसा,अठन्नी,चोअन्नी, दुअन्नी आदि सुगमताके साथ पडसके, ऐसी रखना चाहिये और उसकी शक्तिके अनुसार आने दो आने जैसी उसकी आमदनीहो नित्य उसमें गोनिमित्त डालदिया करे, और प्रतिमास पेटीकोखोलकर जो जमा एकत्रहोवे किसी प्रकारसे गोमाताजीके अर्थ लगादिया करे, ऐसा करनेसे उस बेपारीको बहुतसा फायदा होता रहेगा.

स्त्रियोंकोभी उपदेश करना चाहिये कि वे अपने घरमेंएक गोघट (मिट्टीकाघडा) रक्खैं, और उसमें नित्य मुष्टि दो मुष्टी अन्न अथवा आटा डालदिया करै,जब वो घट भरजाया करैं तब उसे गोशालामें भिजवादे। स्त्री और पुरुष स्वयं गोशालामें जाकर घडी दो घडी ब्रूस अथवा वस्त्र द्वारा गौओंको मले, और डांस मच्छर आदि छोटे छोटे जन्तु जो गौमाताके स्थन और कानोंमें चिपके रहतेहैं उन्हे दूर करदे।

इस प्रकार सेवा करनेसे उन्हें बडा भारी पुण्य होगा। और भी देखिये.

श्लोकः—दत्वा पर गवे ग्रासं, पुण्यं स मह दश्नुते ॥
सिंह व्याघ्र भय त्रस्तां, पङ्क लग्नां जले गताम् ॥

भाषार्थः—पराई गाय तथा अनाथ गायको एक ग्रास अन्नादि थोडासाभी भोजन देनेसे बडा पुण्य होताहै। और सिंह व्याघ्रके भयसे तथा जल, कीचडमे डूबती हुई गौकी जो रक्षा करताहै उसको बडा भारी पुण्य होताहै। इसपर एक दृष्टान्त देतेहैं।

कोई एक धनाढ्य पुरुष था परन्तु दैवयोगसे अथवा उसके पूर्वजन्मके पापोंके उदय होनेसे वह अति दीन अवस्थाको प्राप्त होगया। एक दिन अपने घरमें बैठा हुवा, अपनी वर्तमान स्थितिको देखकर पश्चात्ताप कर रहा था, कि इतनेहीमें उसका एक मित्रआया, और बोला कि आप इतना

सोच मतकरो । यहांसे थोडीही दूरपर एक धनाढ्यपुरुष रहताहै और उन(धनाढ्य)मनुष्यके इसजन्मके कियेहुये पुण्यों को द्रव्यद्वारा मोल लेताहै । आपभी उसकेपास जाइये;और जो पुण्य आपने कियेहैं उनका द्रव्य लाके कुटुम्बका पालन करिये । निदान उसने अपने शुभचिन्तक मित्रका उपदेश मान अपने मित्रके बताए हुए स्थानपर गया । उसने उस धनाढ्य पुरुषसे अपना मनोरथ प्रकाश किया । साहूकारने भी प्रसन्नताके साथ उसकी बात मान अपने सेवकोंसे कहा कि वो तराजू ले आओ उस साहूकारका यह नियम था कि तराजूमें एक ओर तो मनुष्यके किये हुए पुण्योंको एक कागजपर लिखकर रखदे,और दूसरी ओर उसके बराबर सुवर्ण चढावे । जितना सुवर्ण उस कागजके पत्रके बराबर तुले उतनेही बजनका सुवर्ण देदेवे । इसी प्रकार इसकेसाथभीकिया । इसने अपनी सारी अवस्थाभरमें जितना धर्म किया था, वह लिखकर रक्खा । परन्तु हे प्रियपाठको! तराजूमें इतना सोना नहीं चढा कि,जिससे इस बिचारे नवीन निर्धनकी पूर्ति होवे । अन्तमें वह अपने प्रारब्धकी विचित्रता देखकर हताश होने लगा । इतनेमें वह सज्जन (धनाढ्य पुरुष) बोला कि यदि आपने और भी कोई थोडा बहुत पुन्य कियाहो, और वह भूलसे रहगयाहो तो वहभी यादकर लो । उसने उत्तर दिया कि मैने ऐसे २ बडे २ पुण्य किये उसके बदलेमें तो इतना

सुवर्ण चढा, तो फिर छोटे२ पुण्योंको कहतेभी लज्जा आती है। परन्तु उस धनाढ्य साहूकारके अनुरोधसे कहना पडा तब वह कहने लगा कि " मेरे यह नियम था कि एक सेर आटेकी रोटी नित्यप्रति एक अनाथ गौ (जो मेरे मकानके सामनेही रहा करती थी उस)को देदिया करताथा। सो यह भी लिखकर तराजूमें रखता हूं " ऐसा कहकर एक पर्चेपर " गौमाताजीको रोटी देनेका पुण्य " लिखकर तराजूके एक पलडेमें रखदिया तो इतना सोना उसके परिवर्तनमें चढा कि वो प्रथम अवस्थासे भी दूनी चौगुनी असामी बनगया।

हे प्रिय बाचकवृन्दो ! अनाथ गौओंको पालन अर्थात् उनको श्रद्धानुसार तृण, जल, अर्पण करनेमें उनको कितना पुण्य होताहै वह मेरी क्षुद्र लेखनीद्वारा लिखना मानो आकाश पुष्पोंको गृहण करनेकी इच्छा करताहै।

आपको जिस विषयकी इच्छा हो वह अभिष्ट केवल श्रीगोमाताजीकी सेवाहीसे प्राप्त होसकेगा इस विषयमें सैंकडो प्रत्यक्ष प्रमाण लिख सकतेहै। परन्तु हाथ कंकनको आरसा क्या ? आप स्वयंही गोमाताजीकी सेवा करके देख लीजिये कि हमारा कहना कहांतक सत्यहै और भी देखिये रघुवंशकी कथामें वर्णनहै।

" महाराजा दिलीप (सगर वंशोत्पन्न) के कोई संतान नहीं थी। तब उन्होंने संतानके अर्थ श्रीवशिष्ठजी महाराज

(जो उनके कुलगुरूथे) से प्रार्थना की और उपाय पूछा। राजाको चिन्तारूपी समुद्रमें गोते खाते देख गौकी सेवाहीसे इसकी इच्छा पूर्ण होगी ऐसा ठान अपनी "नन्दिनी" गौ की सेवा करनेकी आज्ञा दी वह इसप्रकार खान, पान सेवा सहवास आदि जैसा परम भक्तिपूर्वक ईश्वर और महत्पुरुषों-का करताहै उसी प्रकार इसका कर ।

निदान महाराजा दिलीपने भी अपने गुरु महर्षि श्रीवशिष्ठजीकी आज्ञानुसार, घर और बनमें जाकर दत्त चित्तसे गोमाताजीकी सेवाकर अपनी भक्तिका परिचय दिया वह अकथनीय है ।

रघुसर्ग २ श्लोक २१

प्रदक्षिणी कृत्य पय स्विनी तां, सुदक्षिणा साक्षात पात्र हस्ता ॥ प्रणम्य चा नर्च बिशाल मस्याः, शृङ्गा न्तरं द्वार मिवार्थ सिद्धेः वत्सोत्सुका पि स्तिमिता सपर्यां, प्रत्यग्रहीत् सेति ननन्द तुस्तौ ॥ भक्त्योप पन्ने षु हि तद्विधानां, प्रसाद चिन्हानि पुरः फलानि ॥ तामान्ति कन्यस्त बालि प्रदीपा, मन्वास्य गोप्ता गृहिणी सहायः । क्रमेण सुप्ता मनु संविवेश, सुप्तोत्थितां प्रातर नू दतिष्टत् ॥

भाषार्थ—आश्रममें आई हुई धेनुकी प्रदक्षिणा पूर्वक साष्टाङ्ग प्रणाम करके सुदक्षिणाने गन्धाक्षत पात्रको वाम हस्तमें

धारणकर, दक्षिण हस्तसे नन्दिनीके ललाटकी पूजन करी। मानों यही (ललाट) अर्थ सिद्धिका खुलाहुवा बिशालद्वारहै।

नन्दिनी बालवत्सकी दर्शन लालसाके आधीन होतेहुये भी सुदक्षिणाकी करीहुई पूजाको निश्चलतासे अङ्गिकार की। इससे सुदक्षिणा और दिलीप दोनोंहींको आनन्द प्राप्तहुवा।

राजा अपने पास पूजनकी सामग्री सहित और प्रज्वलित दीपकके पास नन्दिनीको बैठीहुई देख, आपभी राणीसहित बैठ गया। और नन्दिनीको निद्रायुक्त देख आपभी सो गये। प्रातःकाल होते ही नन्दिनीके पूर्वही राजा जागगया।

नन्दिनीने राजाकी परीक्षा करनेके वास्ते अपनी मायाके द्वारा सिंह प्रगट किया। और वह (मायाका सिंह) नन्दिनीके कंठपर बलात्कार कर ग्रीवापर चढगया और नन्दिनीनें शब्द किया। शब्द सुनके और यह दशा देखके राजाको अत्यन्त क्रोध चढा तब। राजा बोला, "अरे अधम सिंह तूं मेरे द्वारा रक्षित नन्दिनीको सतानेकी चेष्टा करताहै, इससे मैं तुझे अ-भी यमालयमें भेजताहूं। ऐसा कहकर राजाने अपना धनुष टंकारा और भातेमेसे बाण निकालनेको पिछाडी हाथ किया कि इतनेमें दैवात् राजाका हाथ वैसाका वैसाही स्थंमन हो-गया, राजाको इस प्रकार देख वह सिंह बोला कि हे राजा!

"अलं महीपाल तव श्रमेण । प्रयुक्तमप्यस्त्र
मितो वृथा स्यात्॥ न पादपोन्मूलनशक्तिरंहः।

शिलोच्चये मूर्छति मारुतस्य " ॥ १ ॥

अर्थ—इसको छुडानेके विषयमें तेरा सब प्रयत्न निष्फल होंगे इसलिये तूं श्रम मत कर। देख वायूकी शक्ति केवल वृक्षादिकोंकोही उखेडनेकी है, न कि पर्वतादिकको ॥ १॥ आगे सारांश श्लोकोंका जो दिया जाताहै उससे मेरा प्रभाव और शक्ति मालुम होगी. कैलास तुल्य शुक्लकान्तियुक्त वृषभपर आरोहन करनेके समय श्री भूतभावन महादेवजी निजचरण कमल स्पर्शसे मेरे पृष्टको पवित्र करतेहैं। अतएव हे राजन् ! तुम मुझे शिवकिङ्कर जानो। मेरा नाम "कुम्भोदर" है मेरा बल कुम्भकर्णके पुत्र "निकुम्भ" के बराबरहै. मैं केवल पशुजाति सिंह नहीं हूं, इसलिये यह तो तेरी भुजाकाही स्तंभन होगया, यदि तूं बाणका प्रहार करता तो वेहे भी खाली चलाजाता।

इस प्रकार सिंहके बचन सुन राजा दिलीप व्याकुल हो गया, और सिंहसे इस प्रकार प्राथना करने लगा.

"स त्वं मदीयेन शरीरवृत्तिं, देहेन निर्वतयितुं प्रसीद ॥ दिनावसानोत्सुकबालवत्सा, विसृज्यतां धेनुरियं महर्षेः" ॥

हे सिंह ! यदि आपका ऐसाही बिचारहै तो मैं इस(गो)के बदलेमें अपने शरीरको आपके साह्मने रख देताहूं, जिसको भक्षणकर आपअपनी क्षुधाका निवारण करलीजिये। गायका

बच्चा बहुत छोटाहै और वह घासभी नहीं खाता है। अब सायंकाल होनेसे वह "मा मा" पुकारता होगा। उसकी दया देखके ही आप इस गायको छोड देवें। इस कार्यसे आपका बडा भारी यश होगा, और गाय बच्चा बच जानेसें मुझेभी बडा पुण्य होगा, तब सिंहने राजासे कहा कि हे राजन्! सुन।

"एकातपत्रं जगतः प्रभुत्वं नवं वयः कांतमिदं वपुश्च॥ अल्पस्यहेतोर्बहुहातुमिच्छन् विचारमूढःप्रतिभासिमेत्वम्

भाषार्थ—यदि जीवकी दयासे तूं अपना शरीर देकर इसे बचाना चाहताहै तो तूं बिचारसे मूढहै, ऐसा मालुम पडता है, क्योंकि परमात्माने कोट्यान कोटि मनुष्योंके पालन करने के वास्ते तुझे बनायाहै। केवल एक गौके लिये ही नहीं। एक गौके बचानेसे जब तूं मारा जावेगा तो इस निष्कंटक राज्य का पालन करनेवाला कौन होगा?

"अथैकधेनोरपराधचंडाद्गुरोः कृशानुप्रतिमाद्बिभेषि॥ शक्योस्य मन्युर्भवता विनेतुंगाः कोटिशः स्पर्शयता घटोघ्नीः"॥

हे राजन्! तेरा गुरु अग्निके समानहै, और दूसरी गायभी उनके यहां नहीं हैं, इस गायके मरनेसे क्रोधित होकर वे तुझे शाप देंगे यदि इस कारणसे तू इतना भयभीत होता होतो, इस एक गायके बदले करोडों गायें जो इससेभी अधिक दूध देनेवाली है वे मुनिको देकर उनका क्रोध शान्त करसकताहै

पुनः ॥

"एतावदुक्त्वा विरते मृगेन्द्रे प्रतिस्वनेनास्य गुहागतेन ॥ शिलोच्चयोपि क्षितिपालमुच्चैः प्रीत्या तमेवार्थमभाषतेव" ॥

भा०—इतनी वात कहकर सिंह चुप होगया, परन्तु उस गुफामेंसे जो शब्द निकलने लगा,उससें यही मालुम होताथा कि, हिमालयपर्वतभी अपने मित्र सिंहकी मित्रताका परिचय देनेके लिये, राजासे सिंहकी वातका मानों अनुमोदन करता है । सिंहके भयसे नन्दिनीके नेत्रोंमें भय उत्पन्न होने लगा ।

राजा बोला कि "हे सिंह ! आप यह आज्ञा करतेहैं कि एक गायके वदले सहस्रों गायें वशिष्ठजीको देकर, उनका क्रोध शान्त कर सकते हो" । पर यह आपका कहना और बिचार सर्वथा अनुचितहै, क्योंकि ।

"कथं नु शक्योनुनयो महर्षेर्विश्राणनादन्य-पयस्विनी नाम् । इमामनूनां सुरभे रवेहि, रुद्रौ-जसा तु प्रहृतं त्वयास्याम् ॥"

भाषार्थ—नन्दिनी अपनी माता कामधेनुके समान महत्व रखती है, इसके परिवर्तनमें करोडों दूसरी गायें देनेसे भी मुनिका क्रोध कदापि शान्त नहीं होसकता । और आप इस प्रकार नन्दिनीको मारनेको उद्यत हुये हैं, सो मैं जानताहूं, कि यह प्रताप केवल श्रीशूलपाणि, आशुतोष, श्री महादेवजी

काही है. नहीं तो दूसरे सिंहकी क्या सामर्थ्य हैं, कि जो नन्दिनीकी तरफ आंख उठा करभी देख सके" ॥

खैर ? अब मैं तुमसे इतनी प्रार्थना करताहूं और आशा रखताहूं कि आप स्वीकार करैंगे क्योंकि आपके और मेरे इतने भाषणसे मित्रता होगई है, अतएव इस मित्रकी यही प्रार्थनाहै कि इसके बदलेमें मैं यह शरीर जो आपके अगांडी समर्पण करताहूं, जिसे भक्षणकर इस मेरे गुरुकी गायको छोडदो?इसप्रकार कहकर,गौका पूर्ण भक्त और अनुचर क्षात्रिकुल भूषण राजा दिलीप उस सिंहके मुंहके साह्मने जैसे कि,मांसके पिण्डके समान गिरगया। इसके गिरनेकी ही देरी थी कि वह मायाका सिंह अन्तर्धान होगया और आकाशमार्गसे पुष्पवृष्टी हुई, और नन्दिनी मनुष्यके समान बाणी बोलती हुई कहने लगी। हे प्रिय पुत्र दिलीप! अब उठ मैं तेरेपर अत्यन्त प्रसन्न हूं। मैने तेरी भक्तिकी परीक्षाके अर्थ यह मायाका सिंह बनाया था, नहीं तो ऋषीके प्रभावसे यमराजभी तो मेरी हानि नहीं करसकता फिर तुच्छ सिंहकी क्या गणनाहै। तेरी भक्ति यथार्थमें शुद्ध अन्तःकरणसे है।तूं वर मांग? प्रियपाठकगणों! उपरोक्त लेखसे आपको राजाकी भक्ति भलीप्रकार विदित होगई होगी। धन्यहै. राजा दिलीपको कि जिसने अपना शरीर भी तुच्छ समझलियाथा। अब आगे क्या हुवा सो अवलोकन करिये। राजा एकदम उठा, और नन्दिनीको मातासमान द-

यालु देखकर प्रार्थना करनेलगा कि हे माता ! मेरा जो अभिष्टहै वह कुछ तुमसे छिपा नहीं है । तब नन्दिनीने उत्तरदिया, हे पुत्र ! तू अब आनन्दसे अपने आश्रममें जा तेरेको शीघ्रही बडा प्रतापी रघुनामका पुत्र होगा और इह्लीके वंशमें स्वयं श्रीविष्णुभगवान अवतार धारणकरके मेरे संतान गौ बैल और ब्राह्मणोंकी रक्षाकर रावणादि दुष्ट राक्षसोंको मार भूमिका भार उतार श्री " राम " नामसे विख्यात होंगे ।

महाराजा दिलीप और नन्दिनीका बडा भारी आख्यान है परन्तु यहांपर स्थानाभावसे संक्षेपमें लिखाहै । यदि आपकी इच्छा विशेष देखनेकी हो तो " रघुवंशकाव्य " (जो महाकवि कालिदासकृतहै) देखें ।

हे प्रिय गोभक्तो ! आप इस समय सूक्ष्म दृष्टिसे विचार करिये कि जब महाराजा दिलीपको किसी प्रकारसे भी सन्तान न हुई, सो केवल कुछ दिन गौमाताकी सेवाहीसे होगई ? इस दृष्टान्तमें गोसेवा करनेका कितना महत्व स्पष्टतासे झलकताहै उसका आपको अनुभव होगया होगा । तथापि और भी देखिये कि श्री शत्रुघ्नजीने सुमन्तजीसे पूंछा कि यह तेजस्वी महा पराक्रमी सत्यवान नामक राजा किसका पुत्रहै ।

रामाश्वमेध

" धेनुं प्रसाद्य बहुभिर्व्रतैर्यं प्राप तत्पिता ।
ऋतंभराख्या जगतीं विदितः परधार्मिकः " ॥

भा०—"ऋतंभरत" नामक जो बडे धार्मिक और जगत् प्रसिद्ध राजा हुएथे। उन्होंने नियमपूर्वक गोसेवा किरी तब॥

"गौः प्रसन्ना ददौ पुत्रमनेकगुणसंयुतम्। सत्यवान् नाम शोभाढ्यं तं जानीहि नृपात्मजम्"॥

भाषार्थ—गौओंने प्रसन्न होकर अनेक गुण संपन्न सत्यवान् नामक पुत्र प्रदान किया था। अहाहा! जब इस माताजीकी सेवा करनेसे ऐसे ऐसे अलौकिक फल मिलते हैं, तब ही तो श्रीमुरारी श्रीकृष्णचन्द्रने इनकी सेवा कीथी।

पद्मपुराण

"यो वै नित्यं पूजयति गामिह यवसादिभिः।
तस्य देवाश्च पितरो, नित्यं भृत्या भवन्ति हि"॥

भाषार्थ—जो पुरुष नित्य प्रति गौ माताजीका तृण जल आदिसे पूजन करते हैं उनपर देवता और पितर नित्यप्रति प्रसन्न रहते हैं।

भविष्य पुराण

"पादाक्रान्तं मदीयो हि, तिलकं कुरुते नरः॥
तीर्थे स्नातो भवेत्सद्योऽभयन्तस्य पदे पदे"॥ १॥

भाषार्थः—जो मनुष्य गायके खुरोंकी धूलि अपने मस्तकपर लगातेहैं, वे सर्व तीर्थोंका फल पातेहैं क्योंकि जहां गायें रहतीहै, वहां सर्व तीर्थ रहतेहैं। इसलिये जो नर गौशालामें प्राण त्यागतेहैं वहभी तत्कालही मुक्त होजातेहैं। यह निश्चय है। देखिये जब इसमाताजीकी चरणरजको केवल मस्तकही

पर धारण करनेसे सर्व तीर्थोंमें स्नान करनेके सदृष फल होता है, तो हे प्रिय पाठक और गोभक्तो ! जब इस माताजीकी पूर्ण रूपसे तृण जल द्वारा सेवा की जाय तो उस करके कितना पुण्यमिलताहै सो मेरी लेखनीद्वारा लिखना सर्वथा असंभवहै

अतएव हे प्रियपाठको ! यदि आपको पूर्ण पुण्य लूटकर प्रत्यक्ष फल प्राप्त करनेकी लालसाहै, तो तन मन धन द्वारा गोमाताजीकी सेवाकरो ओर इनके निमित्त सत्त्यानुसार निज द्रव्य तथा चन्दा एकत्रित कर, अपने अपने शहरमे शीघ्रही गोशाला बनवानेका प्रयत्न करिये, और गौमाताजीकी तृण जल द्वारा सेवाकरनेसे बिमुख न होइये । क्योंकि ऐसा समय फिर कभी आपके हाथ नहीं लगेगा ।

हे प्रियपाठको ! अपने धर्मग्रन्थोंके सिद्धान्तानुसार यावद्धर्मोंकी खानि केवल गोमाताजीही है । इस विषयका शास्त्रीय प्रमाण नीचे देखिये ।

अग्नि पुराण

" अन्नमेव पर गावो, देवानां हविरुत्तमम् ॥
पावनं सर्व भूतानां, रक्षन्ति च वहन्ति च " ॥ १ ॥

भाषार्थ—गौओंके पुत्रोंसे अन्न होताहै, और गौमाताहीसे सब देवताओंको हवि मिलती है, और केवल गौकेही दूधसे पंचगव्य बनताहै, और उसीके पानसे लोग पवित्र होतेहैं । इस विषयका एक दृष्टान्त आपके दृष्टिगोचर करातेहैं ।

किसी देशमें एक शुद्र रहताथा, और उसके गौ बछडा आदिहीसे आजीविकाथी। अर्थात् उसका दुग्ध उस नगरके मनुष्योंके यहां विक्रियार्थ जाया करताथा। अकस्मात् एक दिन उसके यहां कोई अतिथी चला गया, उसने उन साधूको श्रद्धापूर्वक गोरस (छाछ) पान कराया और स्वयं आपनेभी भार्या सहित पान किया। उस गोरसके पान करनेके प्रभावसे दूसरे जन्ममें उन्होंने ब्राह्मणके यहां जन्म लिया, और दिव्यज्ञानको प्राप्तहुए जो कि, बडे २ योगियोंको दुर्लभहै।

हे त्रितापनिवारिणी माता! तेरे दुग्ध दधि घृतादि पदार्थोंमें ऐसा अलौकिक गुणहै, तबही तो श्रीविष्णुभगवान मोहित होकर स्वयं तुझे चरानेको बनमें जातेथे। और श्रीमद्भागवत्में श्रीकृष्णपरमात्माका कथनहै कि "गौको मेराही स्वरूप जानो" इस विषयका शास्त्रीयप्रमाण नीचे देखिये।

"विप्रा गावश्च वेदाश्च ऋतवश्च हरेस्तनुः॥"

अर्थ—ब्राह्मण, गाय, वेद, यज्ञ, ये हरीहीके शरीरहैं। इस वास्ते हे प्रियपाठकवर्गो! गो सेवा करनेसे श्रीविष्णुकी सेवा होगी। इसमें किसी प्रकारका सन्देह नहीं है। तथा और भी देखिये।

शंखस्मृतिः

"बालवृद्धरोगार्ताः श्रान्ता उपासीत शक्तितः॥
प्रतिकारं कुर्यात् गवां एष धर्मः अन्यथा विप्लवः॥

गा रक्षेत तास्वपीतासु न पीबेन्न तिष्ठेदुपविशतीषु न स्वयमुत्थापयेच्छनैरार्द्रशाखया सपलाशया पृष्ठतो निहन्यात् ॥ इति ॥

भाषार्थ—शंखमुनि कहते हैं कि जो बाल, वृद्ध, रोगी, कोई भी हो, बडे परिश्रमसे शक्तिअनुसार गायकी सेवा करैंगे वे सदैव सुख पावेंगे, और जो न करैंगे तो नाश हो जावेंगे । भा०-मनुष्यको चाहिये कि गायकी सदा रक्षा और सेवाकरे। गायचाहे सूधीहो चाहे खरहटी (तीव्रस्वभाव)हो,चाहे पानी पीतीहो, चाहे बैठीहो उसको छेडना नहीं परन्तु धीरेसे पीछे को जाकर कोमल हरा व उत्तम घास उसको डालदेनाचाहिये

हे प्रियपाठको ! बैठी गायको हटानेसे बडा पाप होताहै, जब भरतजीने कौशल्यासे शपथ करके कहा कि हे मातेश्वरी! श्रीरामचन्द्रजीको बनमें भेजनेमें जो मेरी संमतिहो, किंवा मुझे यह बात मालूमभीहो तो मेरेको वह पाप लगे, जो गौके लात मारने वा बैठी हुईको उठानेसे होताहै ? सो ।

प्रियपाठको! अपने यहां क्या वेद,क्या पुरान,क्या उपनिषद, आदि ग्रन्थोंमें इस कलिकलुषहारिणी श्री गौमाताजीकी सेवा करनेका इतना महात्म लिखाहै, तो फिर आप हस्तगत अमृतको छोडकर क्यों इस असार संसारमें गोते खाते हो ।

कवित्त

" धरोही रहेगो धन धरणी अरु धवल धाम, वृथा है लगानो नेह देह गेह धरनी सों ॥ ऊंचे ऊंचे अटा

अरु अटारी सारी न्यारी, धरनीमें समाय अरु प्रगट होत धरनी सों ॥ क्षणको भरोसोनांहिं वर्षोंको सामाकैं, कोऊ ना अघात इस माया मन हरणी सों ॥ काम नहीं आवत कोऊ अन्त समय शालिग्राम, गैय्या ही तारत बन तरणी बैतरणी सों "॥ १ ॥

जब इस प्राणीको यमदूत पकडकर यमालयमें ले जाते है, और उसे अतिनिर्दयतासे मारते हैं कि जिसके सुनने मात्रहींसे मनुष्यका रोमाञ्च होजाताहै। तब वे प्राणी यमदूतोंके कठोर दंडसे बिकल होकर बारंबार पुकारतेहैं कि हे पुत्र! हे भाई! इन पाशधारी यमदूतोंसे हमारी रक्षा करो। तब वे यमकिङ्कर उन्हें बारंबार ताडना करतेहैं, और कहतेहैं कि अरे नीचो! देखो न तो तुमने अपने उद्धारार्थ गौमाताजी को ग्रास दिया और न उनको तृण, जलसे सन्तुष्ट किया, तथा न श्रीकृष्णके निमित्त गौ दान किया। केवल अपने कुटुम्बकेही भरण पोषण करनेमें आसक्त रहे। तो अब इस समय तुह्मारी रक्षा कौन करसक्ताहैं।

इस वास्ते हे प्रियवरो! हमारे लिखनेका सारांश यहीहै कि इस मनुष्य योनिमें उत्पन्न होकर यदि तन, मन, धन से किसी प्रकारसेभी गौमाताजीके अर्थ उपकार होजावे, उतना ही आपके लिये इस लोकमें धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, आदि पदार्थोंकी प्राप्ति, और परलोकमें मोक्षकी देनेवाली है।

यह बात आप सत्यही सत्य समझें, कि इस असार संसारमें उत्तिर्ण होनेके लिये श्रीगौमाताजीही ब्रहत् नौकाहै । और श्री अखिल लोकेश्वर श्रीमन्नारायण श्रीभागवतके तृतीय स्कंधमें कहते हैं, कि गौ और ब्राह्मण मेरे परम देवता हैं । जो लोग गौ ब्राह्मणोंका अनादर करतेहैं वो मेरेको प्रिय नहीं लगते, और मेरा चित्त सदा गौ ब्राह्मणोंहीमें रहताहै । मेरा इष्ट गौ ब्राह्मणहैं ।

अव देखिये कि स्वयं श्री वैकुण्ठनाथ जगदीश्वर श्रीगौमाताजीकी कितनी स्तुति करते हैं तो फिर आप अभिष्ट फलप्रदायिनी गौमाताजीकी सेवा करें इसमें आश्चर्यही क्याहै ।

हे प्रियवरो ! ये गौमाताही स्वर्गमें आरोहन करनेके वास्ते उत्तम निसरणी (सीडी) है । सर्व जीवोंके कल्याण व उद्धार तथा यज्ञ साधनकेही अर्थ ब्रह्मा, विष्णु, महेश, आदि तेतीस क्रोड देवताओंने गौ रूपधारण कियाहै ।

जिस देशमें गौओंका समूह अति प्रसन्नताके साथ श्वास छोडताहै, वह देश अकाल आदि उपद्रवोंसे रहित रहताहै ।

अतएव हे प्रियपाठकगणों ! अब अधिक कहने सुननेकी कोई आवश्यकता नहींहै, आप कायिक अर्थात् शरीर द्वारा, वाचिक अर्थात् बचन द्वारा, मानसिक अर्थात् मनद्वारा गौमाताजीकी सेवा करनेमें कटिबद्धहो जाइये । फिर देखिये कि इसके परिवर्तनमें आपके यावत् अभिष्ट सिद्ध होतेहैं या नहीं।

मैंने बहुधा देखाहै कि कइएक महाशयोंकी एक प्रकारकी विचित्र रीति होती है, कि जब कोई गौभक्त गौमाताजीके निमित्त प्रार्थना करताहै कि"महाशयजी आप गौमाताजीके निमित्त इस प्रकारका उद्योग करिये" तो उनके मुखसे इसके उत्तरमें केवल दो तीनही शब्द निकलतेहैं? अर्थात् वे अपनी प्रेतबाणीसे झट कह बैठतेहैं कि अभी तो हमें अवकाश नहीं है, क्या करैं भाई। घरके धन्धेसेभी फुरसत नहीं मिलती।

हे प्रियपाठको! यह बात आप अच्छी तरहसे याद रक्खैं कि जहांतक आपको व्यापारादि कार्योंसे फुरसत नहींहै वहांतक आपको गौमाताजीकीसेवा करनेका सौभाग्यहै। इसविषयपर आपको एक दृष्टान्त सुनाते हैं। और आशाहै कि ये दृष्टान्त आपको जैसा मनोरंजकहोगा,वैसाही उपदेशजनकभी होगा॥

"एक पण्डित और सेठजीका दृष्टान्त"

किसी एक पण्डितजीका धनाढ्य सेठके साथ परिचयथा। पण्डितजी नित्य सेठजीके स्थानपर आया जाया करते थे, और बहुधा यह उपदेशभी किया करते थे।

श्लोकः

अम्बरीष शुकप्रोक्तं नित्यं भागवतं शृणु।
पठस्व स्वमुखेनापि यदीच्छसि भवक्षयम्॥

भाषार्थ—गौतमजी कहते हैं, कि हे अम्बरीष! जो तुम इस संसारसागरसे पार होना चाहो तो यह पुराण (श्रीमद्भा-

गवत) सुनो। जो कि व्यासदेवके पुत्र श्रीशुकदेवस्वामिने राजर्षी परीक्षितको सुनाई है। उसको सुनो। और अपने मुखसे पाठभी करो।

इसप्रकार पण्डितजी सेठजीको श्रीमद्भागवत बंचानेकेवास्ते कहा करतेथे, परन्तु पण्डितजीके ऐसे सदुपदेशको सुनकर, सेठजी इसके प्रत्युत्तरमें कहदेतेथे कि अभी तो हमें अवकाश नहीं है, फिर कभी देखा जायगा। बस केवल ऐसे दो तीनही शब्द बोलकर अपने मुखरूपीबिवर(बिल)को बन्दकरलेतेथे। थोडेही दिनके पश्चात् सेठजीका अकस्मात् देहान्त होगया।

कवित्त

" घोडा पील पालखी खवास खिदमतगार जाके। रणमें प्रवीण औ चलैया तलवारके॥ हीरा औ जवाहिर तोशेखानेमेंही धरे रहैं। ऐसे छोड चले जैसे बचकाबेगारके॥ बेणीकवि कहे परस्वारथ न कीन्हे मूढ। कीन्हें काज केवल सुत घरही पितु नारके॥ काल शर सांधे मद मायामें आंधे कछु। गांठ नहीं बांधे जब कांधे चले चारके " ॥ १ ॥

सवैया

" गर्भ चढे पुनि सूप चढे पलनापे चढे चढे गोद घनाके॥ हाथि चढे अरु घोडा चढे सुख पाल चढे जो न धनाके॥ बैरिओ मित्तके चित्त चढे कवि

ब्रह्म भनै दिन बीते पनाके ॥ ईश कृपालको
जान्यो नहिं अब कांधे चढि चले चार जनाके ॥
(महा कवि-बीरबल)

जब सेठजीकी दाह क्रियाके वास्ते उनको स्मसानभूमिका को लेगये,पंडितजीभी उनके साथ गये। और जब सेठजीको चितामें रक्खे, कि उक्त पण्डितजीने झट अपनी पोथी पत्रा खोलके कथा बाचना प्रारंभ करदी। लोगोंने उनसे कहा कि आप क्या करतेहैं? क्या यह समय कथा बांचनेकाहै? इसबात पर पण्डितजी बोले,कि भाइयो! मैने इन्हें कई एकवार कथा सुनानेका अनुरोध किया,परन्तु आप इसके उत्तरमें सदा यही कहा करते थे कि अभी तो मुझे अवकाश नहीं है। इस वास्ते इन्हें अब पूर्ण अवकाश मिलाहै, सो मैं इन्हें कथा सुनाताहूं। वे लोग पण्डितजीके गूढ बचनोंका भावार्थ स्पष्टतासे समझ गये, और केवल उस कृपण धनाढ्यकोही नहीं किन्तु स्वयं अपनेकोभी बारंबार धिक्कार देनेलगे, कि हाय! मनुष्य केवल स्त्री पुत्रादिकोंके लालन पालन करनेमेंही इस मनुष्य देहके कर्तव्यकी समाप्ती कर देताहै।

॥ कवित्त ॥

पायोहै मनुज देह ओसर बन्योहै आय।
ऐसी देह बार बार कहो कहां पाइये ॥
भूलतहैं बावरे तूं सबते सयानो होय।
रतन अमोल यह काहे को गमाइये ॥

समुझ बिचार कर ठगनको संगत्याग।
ठगजै हैं देख कहूं मन न डुलाइये॥
सुन्दर कहत तूं अबभी सावधान होय।
हरीको भजन कर हरीमे समाइये॥ १॥

सो इस वास्ते हे प्रिय सुहृदय पाठको! आप इस अमूल्य नरदेहको केवल भोगादिक विषयोंमें आसक्त न करिये। जिस प्रकार कमलके पत्रस्थित जल अति चञ्चल होताहै, उसी प्रकार इस मनुष्यके जीवनकीभी अति चपल स्थिति होतीहै, और जब यह प्राणी शरीर छोडके यमदूतों द्वारा अति कठोर पाशों(पाशियों)सेबन्याहुआ बैतरणीनदी मार्गहोकर नरकोंमें असीम क्लेश सहताहुआ यमालयमें जाताहै। तब यमराज इसे देखकर, कहते हैं, कि अरे मूर्ख! तुझे बारंबार धिक्कारहै? जो आज तूं हमारे स्थानपरआया। अरे दुष्ट! तूंही देख कि, चौरासी लक्षयोनियोंमेंसे सर्वोपरि मनुष्ययोनीहै, जो कि जिसकी देवता लोगभी इच्छाकरतेहैं। फिर तैंने ऐसी नरदेहि पा करभी स्वर्ग व मुक्तीका कोईभी साधन न करसका? और यहांपर तूं हमें पवित्र करनेकों आया।

राग भैरवी

"इस प्राणीको कृष्णभजनही परमानंद दिखाना हेरे॥ बिनाकिये हरिभक्ति जगतमे मुक्तिन कोई पाता हेरे॥ १॥ धन दौलत औ कुटुम्ब कबीला

कोई कामन आता हेरे ॥ सब अपने स्वारथ स्वारथके मुख देखेका नाता हेरे ॥२॥ हारा पुत्र पौत्रके ऊपर फूला नहीं समाता हेरे ॥ मया मोह लोभके बश हो वृथा जन्म गुमाता हेरे ॥ ३ ॥ अबभी समझ अरे अज्ञानी कहे जिन्हे तू भ्राता हेरे। अन्त समय कोइ कामन आवे आप अकेला जाता हेरे ॥ ४ ॥ काल आय जब शिर पर गाजत, कफ घटमें घिर आता हेरे। आंख फाड तब चहुं दिशि देखत, शिर धुनि धुनि पछताता हेरे ॥ ६ ॥ हरि हरि भज राजस तामस तज, जो तेरा सुख दाता हेरे ॥ ७ ॥ वोही सर्व जगतका स्वामी, सब दुख द्वंद मिटाता हेरे ॥ ८ ॥ माया मोह द्रोह ममता तज, जो नर हरि गुण गाता हेरे ॥ ९ ॥ "शालिग्राम वही इस जगमें पूरण भक्त कहाता हेरे" ॥ १० ॥

पाठकगणों! अब अधिक क्या कहूँ। आपभी महाराजा यमराजके उपरोक्त उपदेशको मान करके श्रीगोमाताजीकी श्रद्धापूर्वक सेवा करिये क्योंकि अन्तसमयमें आपका उद्धार केवल श्रीगोमाताजीहीके द्वारा होगा।

हे प्रियभ्रातृगणों! आप इस वर्तमान समयको एक पर्वकालही समझके गोमाताजीकी तन मन धन द्वारा(कि)किसी

प्रकार सेवा करिये ।यहांपर यदि यह शङ्काहोवे कि पर्वकालमें तो और समयकी अपेक्षा अधिक पुण्य होताहैं । जिसका समाधान यहहै कि पूर्वकालमे जो फल वर्षोंतक घोर तपस्या करनेसेभी नहीं होताथा, वो वर्तमानमें श्रीगोमाताजीकी तनिक सेवा करनेसे प्राप्त होजाताहै । मेरे इस कथनकी पुष्टी श्रीमत्परमहंस संहिता अर्थात् श्रीमद्भागवतजी करतीहै । जिस समय गोरूपी पृथ्वी और धर्मरूपी वृषभके पीछे म्लेच्छरूपी कलियुग दौडता जाताथा, उससमय राजापरीक्षितने उन्हें देखा, और क्रोधमें मूर्च्छितहो बोला कि अरे दुष्ट ! खडारह । मेरे शासनमें तैने ऐसा नीच कर्म करनेका साहस किया, इस वास्ते मैं तुझे प्राणदण्ड दिये बिना कदापि न रहूंगा । निदान राजा परीक्षितसे कलियुगने अपना छुटकाराहोना कठिन समझा तब वो उनके चरणोंमें गिरपडा, और गिडगिडा कर बोला, कि हे नाथ ! मुझे मत मारो । मैं आपकी शरणहूं । मेरा अपराध क्षमा करो । ऐसी प्रार्थना करनेपर राजाका कुछेक (किंचित) क्रोध शान्तहुवा, और बोला । कि अरे नीच ! तूं इन बिचारे निरपराधी गायों और बैलोंको क्यों सताताथा । उसने अपनी सारी व्यवस्था कही, और बोला कि हे नाथ ! मेरे औगुणोंका तो आप बिचार करतेहैं. परन्तु मेरे गुणोंकी ओर तनिकभी ध्यान न दिया सो ? दीजिये,मुझमें कई एक ऐसे उत्तम गुणहैं । जिनका आपसे निवेदन करताहूं। सतयुगमें जिस राजाके राज्यमें

एक मनुष्य अपराध करताथा, तो समस्त राज्यभरके मनुष्यों-को उसका दण्ड मिलता था। और त्रेतायुगमें एक मनुष्यके पापकरनेसे सर्व नगरके मनुष्योंको दण्ड दिया जाताथा। और द्वापुरमें जो कोई पाप करता तो उसके कुटुम्बियोंकोही शिक्षा मिलती थी। किंतु कलियुगमें जो पुरुष अन्याय करताहै वो स्वयं अपने शरीर द्वाराही भोग लेताहै उसके कुटुम्ब आदि-कोंसे कुछ प्रयोजन नहीं। "कलौकर्ताहि लुप्यंते" और यु-गोंमें मनुष्योंको मानसिक अर्थात् मनसे कियाहुवा पाप लग-ताथा, और उसका दण्डभी भोगना पडताथा। परन्तु मेरे रा-ज्यमें मनुष्योंको मानसिक पाप नहीं लगता किन्तु मानसिक पुण्यकाफल मिल जाताहै। और सतयुगमें जो कोई मनुष्य वै-कुण्ठ जानेके लिये दशसहस्त्र वर्ष तप करतेथे तब उनकी म-नोकामना सफल होतीथी, और त्रेतायुगमें मनुष्यअमित द्र-व्य व्ययकरके सहस्त्रोंवर्ष अश्वमेधादियज्ञ करतेथे तब उनका मनोरथ सिद्ध होताथा। द्वापुरमें सो वर्षतक दान वृत, पूजन, ध्यान, आदि करनेसे उनकी इच्छा पूर्ण होतीथी। परन्तु हे राजेंद्र! मेरे राज्यमें जो मनुष्य एक पल मात्रभी एकाग्रचित्त करके, शुद्धमनसे परमेश्वरका स्मरण और ध्यान तथा उनकी कथा वार्ता कहने सुननेसे वह अपने सर्व कार्योंको साधनकर अनेक जन्मोंके पापोंसे छूट मोक्षका भागी होजाताहै।

जब राजापरीक्षितने कलियुगके मुखसे इसके गुणोंको सुने

तब उनका क्रोध शान्त होगया, और बोले कि मैंने तेरा अपराध क्षमाकिया परन्तु फिर कभी ऐसा नीचकर्म नहीं करना। तव कलियुगने प्रार्थना की कि; हे दीनदयालु ! आपने मुझे अभयकर जीवदान दियाहै तो कृपाकर मेरे रहनेकेलिये कोई स्थानभी बतादीजिये। तब राजाने जुआ,मद्य,स्त्री,सुवर्ण,और चौरी इसप्रकार पांच स्थान उसके रहनेके वास्ते वता दिये।

प्रियवरो ! जितनी एक दुष्ट मनुष्यमें पाप करनेकी शक्ति नहीं है, उससेभी जादा गोमाताजीमें पापनाश करनेकी शक्ति हैं। ऐसा अपने श्रुति, स्मृति,पुराण,आदि धर्मग्रन्थोका सिद्धान्त है। जिसका अनुभव आपको इस पुस्तकको आद्योपान्त पढनेसे होगा.

प्रिय वैश्यभ्रातृगणो ! आप लोगोंके हृदयमें तो गोमाताजीकी भक्ति होना, यह एक स्वाभाविक गुण है। और शास्त्र भी आप लोगोंके विषयमें ऐसाही कथन करता है देखिये।

श्रीमद्भगवद्गीता

कृषिवाणिज्यगोरक्षा वैश्यकर्म स्वभावजम् ॥

अर्थात् खेती, व्यापार, और गोरक्षा, यह वैश्यलोगोंका स्वाभाविक कर्म है। फिर आप लोगोंको तो अपना स्वधर्म कर्म पालनकरना उचितहीहै,किन्तुकई सज्जन यवन(मुसलमान) महाशयभी इस गौमाताजीको उत्तम और अनेक पदार्थोंकी दाता मान,वडेआदरसे पालनकरते और दयादृष्टिसे देखतेहैं।

मेरी एक प्रतिष्ठित यवन महाशयसे मित्रता थी, उनके आगे जब कभी इस विषयकी (गोरक्षा संबंधी) चर्चा चल पडती, तो वे कहा करते थे कि हमारे यहां भी एक गाय है, वो दुग्ध तो बिशेष नहीं देती है मगर यह पाक जानवर है, इसलिये रख छोडी है। वे कभी कभी पण्डित जगतनाराण-जीकृत "इल्तमास काबिल गोर" पुस्तक पढा करतेथे। और बोले कि, जब मैं बिस्तरसे उठताहूं और मेरे नोकरोंका चहरा देखता हूं तो मेरा सारा दिन बडाही खराब गुजरताहै ? और अलावा इसके खानाभी देरसे मिलता है। मगर जब कभी ऐन सुबहही गौका दीदार होता है तब तो सारा दिनही बडा खैरियतसे गुजरता है चुनाचे मैं जिस कमरेमें आराम करता हूं उस कमरेके सामनेही उस गौको बँधवा देता हूं, ताके सु-बह होतेही गौके दर्शन होजावे"

हे प्रिय गोभक्तो ! आप स्वयंही अनुमान करलेंगे कि इस यवन कुलभूषण महाशयके कथनके अक्षर २ में कितनी गो-भक्तिरूपी अमृतके फुहारे छूटते हैं, तो हे गुणग्राही पाठको ! जबके अन्यजातीके पुरुषभी श्रीगौमाताके परोपकारी गुणोंपर मोहित होकर बडी आदरकी दृष्टिसे देखतेहैं। और सहस्रों रु-पैये चंदामें प्रदानकर उस सर्व शक्तिमान करुणा वरुणालयके कृपाभाजन बनतेहैं । मेरे उपरोक्त लेखको चरितार्थ करनेवा-लेका नाम हिन्दीके प्रसिद्ध साप्ताहिक श्रीवेंकटेश्वर समाचार

पत्रहै जिसमें पढकर जितना हर्षहुवाहै, वह सीमासे बाहरहै ।

गुजरातमें गोपालन

" मुंबईके गवर्नरने गौओंका पालन करनेके लिये गोशाला स्थापितकी है, उसके फण्डमें अभी अधिक रुपैया नहीं हुवाहै, इस प्रान्तके हिन्दुओंने मौन साधन कियाहै । इस सप्ताहमें एक सहस्र रुपैया मुंबईके प्रधान पादरीने दियाहै । तीन सो रुपैये गवरनरके कर्मचारियोंमेंसे इकठ्ठे हुये हैं । (वै. स. मु. ता. १२ सं. २४।१९०१) और आगे इसी पत्रमें कहीं पर मुंबई गवर्नमेण्टका " गोपालक " नामक एक लेख दिया है । उसको यहांपर स्थानाभावसे नहीं लिखा उस बृहत् लेख का सारांश यहहै कि श्रीमान लार्डनार्थकोट महाशयने गौओं की रक्षाकर देशका बडाभारी उपकार कियाहै, और आपने इसकाममें असाधारण दयाप्रकाश करके गौ, बैलोंका, पालन कर अपनी अतुलकीर्तिको भारतमें छोड जावैंगे " । देखो

भर्तृहरि

"पद्माकरं दिनकरो विकचं करोति चन्द्रो विकासयति कैरवचक्रवालम् ॥ नाभ्यर्थितो जलधरोपि जलं ददाति सन्तः स्वयं परहितेषु कृताभियोगाः" ॥१॥

अर्थ—सूर्य कमलके समुदायको प्रफुल्लित करता है और चन्द्रमा कुमोदिनीके समुदायको विकासित करता है । तथा मेघभी विनामांगे जल देताहै, इसीप्रकार साधुलोग आपही दूसरोंका उपकार करते है । यह उनका स्वभावही होता है ।

प्रियवरो ! गोमाताजीकी सेवा करनेमें तथा अनाथ लूली लंगडी गौओंके निमित्त चंदा एकत्रित करके उनके रहनेके वास्ते गोशाला बनानेमें तथा गौओंके निमित्त व्यापारादिकमें, गोकर लगानेमें कितना पुण्य होता है उसका अनुभव आपको इस पुस्तकके अवलोकन करनेसे होगा।

अब गोदान करनेमें कितना पुण्य होता है सो अभी नीचे लिखाजाता है।

सरस्वतिगीता

परलोकं गोप्रदास्त्वाप्नुवन्ति, दत्वानड्वाहं सूर्यलोकं व्रजन्ति॥ वासो दत्वा चांद्रमसं तु लोकं दत्वा हिरण्यममरत्वमेति॥ १॥ धेनुं दत्वा सुप्रभां सुप्रदोहां, कल्याणवत्सामपलायिनींच॥ यावन्ति रोमाणि भवन्ति तस्यास्तावद्वर्षाण्यासते देवलोके॥ २॥ अनड्वाहं सुव्रतं यो ददाति हलस्य वोढारमनन्तवीर्यम्॥ धुरंधरं बलवन्तं युवानं प्राप्नोति लोकान्दशधेनुदस्य॥३॥ ददाति यो वै कपिलांसचैलां कांस्योपदोहां द्रविणैरुत्तरीयैः॥ तैस्तैर्गुणैः कामदुहाथ भूत्वा नरं प्रदातारमुपैति सा गौः॥४॥ यावन्ति रोमाणि भवन्ति धेन्वास्तावत्फलं भवति गोप्रदाने॥ पुत्रांश्च पौत्रांश्च कुलं च सर्वमासप्तमं तारयते परत्र॥५॥

भाषार्थः—सरस्वतीजी तार्क्ष्य ऋषिप्रति कहती है कि हे विप्र! गोप्रदान करनेवाले पुरुष देवलोकके पारलोकमें जाते हैं। बैलका दान देनेवाले सूर्यलोकको जाते है वस्त्रदान करनेवाले चन्द्रलोकको, और सुवर्ण देनेवाले देवता होजाते है सुन्दर कान्ति और सुन्दर दूध देनेवाली, सुन्दर बछडावाली नहीं भागनेवाली, ऐसी गौ दान करनेवाला गौके जितने रोम होते है उतने वर्ष देवलोकमें बसते है सुन्दर हलको वहानेवाला और अनन्तवीर्यवाला धुरको धारण करनेवाला बलवान और जवान बैलका दान करनेवाला दश गौ दानके फलको प्राप्त होतेहैं। जो मनुष्य बस्त्रोंसहित कांसीका दोहना और पाल आदि वस्त्रसहित कपिला (गौ) का दान करताहै, वह गौ तिनतिन गुणोंसे कामदुहा होकर दाता मनुष्यको प्राप्त होतीहै। गौके जितने रोमहैं उतना फल गोदानमेंहैं,। परलोकमें पुत्रपौत्रादि और सात पीढियोंको तारतीहै।

हे प्रिय गोपालको! देखिये। एक गौदान करनेसे जितने गौके रोम होतेहैं उतने वर्ष गौदान करनेवाला देवलोकमें बसताहै, तभी तो यावद्दानोंमें केवल गोदानही सर्व दानोंके तुल्यहै। ऐसा अपने शास्त्रकारोंका कथनहै।

" स्वकर्मभिर्दानवसंनिरुद्धे, तीव्रान्धकारे नरके पतन्तम्॥ माहार्णवे नौरिव वातयुक्ता दानं गवां तारयते परत्र " ॥

अर्थात्—अपने कर्मोंसे दानों करके रोके हुए बहुत अन्धकार युक्त जो नरक जिसमें गिरते हुए मनुष्यको महासमुद्रमें वातयुक्त नावकी तरह गौकादान परलोकमें तारताहै।

सदक्षिणां काञ्चनचारुश्रृंगीं, कांस्योपदोहां द्रविणैरुत्तरीयैः॥ धेनुं तिलानां ददतो द्विजाय, लोका वसूनां सुलभा भवन्ति॥१॥

अर्थात्-दक्षणासहित सोनेकी सुन्दर श्रृंग(सिंगडियां)सहित और कांसीका दोहना और पाल (झुलना) आदि वस्त्रोंसहित तिलोंकी धेनुको ब्राह्मणोंके अर्थदेनेवालोंको वसुलोक सुलभहै।

प्रियपाठको! यहांपर एक दृष्टान्त आपके मनोरंजनार्थ एवं उपदेश निमित्त एक कृपणसेठ और बुढ्ढीगायका देते हैं।

कवित्त (कृपनका वचन)

"दाता घर जातीतो कदर ऐसी नाहिं पाती, मेरे घर आई तो बधाई बांट बावरी॥ खाने दश खाने तयखानें छिपाय राखूं। होउना उदास मेरो यही चित्त चावरी। खाऊं ना खवाऊं मरजाऊं तो सिखाय जाऊं नाती और पूतनकों आपनो स्वभावरी॥ दमडी ना देऊं कभी स्वप्नमें भिखारिनको, कृपणक है लक्ष्मी घर बैठी गीतगावरी॥

(कृपण सेठ और गोका दृष्टान्त)

एक वैश्य महाकृपणथा,जो भोजनभी कठिनाईसे करताथा, दानकरनेके भयसे'द'अक्षरभी अपनेमुखसे उच्चारण न करता

कवित्त

" पोरके किंवाड देत, घरे सबैं गारी देत, साधु
नको दोष देत प्रीति ना चहतहैं। मांगनेको ज्वा
ब देत' बात कहे रोय देत, लेत देत भांजी देत,
ऐसेही निवत है। बागेहूके बंद देत, बारनको
गांठ देत, परदनकी कांछ देत, काममें रहत है।
एतेपै सबकोई कहै लाला कछुदेतनाहिं लाला-
जी तो आठों जाम, देतही रहत हैं॥ १॥

एक दिन दैवयोगसे सेठजी रोग ग्रसितहोके, यमालयकी यात्रा करनेके वास्ते अपने उपार्जित कियेहुए पापोंकी गठरी पुठरी बांध कटिबद्ध हो रहेथे। तब उनके पुत्रोंने कहा, कि पिताजी! हमारी इच्छाहै कि इस समय आपके हाथसे एक गाय पुण्य करादेवें। सेठजीने इस बातपर बहुत आना कानी की, परन्तु उसके पुत्रोंने इनकी बात न मानी, तब अन्तमें सेठजी बेबस होकर बोले, कि अच्छाभाई तुह्मारी यही इच्छाहै तो एक काम करो कि, अपने सुक्खन घोसीके एक गायहै, वह मुझसे उस गायका तीन रुपैया मांगताथा, और मैने उसके दो रुपैये देनेको कहाथा, उसने जब तो नहीं दी? परन्तु अब दो रुपैयेमें देदेगा, क्योंकि वह गाय महादुर्बल और बूढी तथा दूधहीनहै।

दोहा-" दांत घिसे अरु खुर फटे, तनिक दूध नहिंदेय॥
ऐसी बूढी गायको, कौन बांध भुस देय " ॥ २ ॥

सो तुम उसे खोललाओ। मैंने एकदिन अचानक मार्गमें जाते हुये किसी पौराणिककीकथा बच रहीथी उसमें सो सुनी. "गोदान करनेका बडाभारी पुण्यहै नरकमें गिरतेहुए कोभी पीछी गौमाताही स्वर्गमें लेजातीहै" ये शब्द जाते २ सुने। ये सुन मैं भी राजा कर्णका अनुकरणी होनेके लिये अपने मनमें गोदानका दृढ संकल्प करलिया. और गोदानके लिये बज्रवत् हृदयकर एकदम दोरुपैये धाम दिये, फिर मैं अपने घरू धंधेमें लगगया। और कुछ अवकाशभी न पाया। यदि किसी समय अवकाशभी हुवा तो यही बिचार मनमें रहा कि जहांतक हो सके इससेभी थोडे में मिलजावे तो उत्तमहै। मैं उसके घरपर कईबार गया. और पावआना आधआना अधिकभी करआया। परन्तु उसकी इच्छा ढाई रुपैयेसे कमती न पाई। सो अब तुम जाओ, दोचार आनेकी बचत् होजावे उतनाहीं अच्छाहै, ढाई रुपैयेमें तो वह देहीदेगा, परन्तु इतना जरूर याद रखना कि नोकरकी दस्तूरी और बट्टेके पैसे काट लेना, सो वो पैसे ब्राह्मणको दक्षणा देनेके समय काम आवेंगे"। ये सुनकर उसके पुत्रोंने तुरन्तहीजाके ढाईरुपैयेमें गाय लाकर कृपणसेठजीके साह्मने खडी करदी। और घरू पुरोहितजीको बुलाए। पुरोहितजी अपनी प्रेतबाणीसे नीचे लिखाहुआ संकल्प उच्चारण करने लगे।

सकंल्प—" ॐ वेश्यां वेश्यां तत्सद ब्राह्मणे, दोपहर

प्रहरार्धे श्रीश्वेतगौकल्पे वैवस्वतमनुमन्तरे अष्टा विंशतिमेयुगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जंबुद्वीपे भारतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे काशीखण्डे महाश्मशाने गौरीमुखे मासाना मसान मासे शूकर पक्षे मलिनतिथौ उपूर्णमायां चन्द्रग्रहणपर्वणी कालनिमित्तं इमां गां ठंठाम् अस्थिचर्मसहितां दुग्धवच्छक रहितां जीर्णवस्त्रसहितां रुधिरमांस वर्जितां लालचीशर्मणे तुभ्यं हं संपद्यते"॥ इति॥

कबित्त

राग कीन्हें रङ्ग कीन्हें तरुणी प्रसङ्ग कीन्हें, हाथ कीन्हें चीकने सुगंध लाख चोलीमें। देह रची गेह रची सुकृति सनेह रची, बासर व्यतीत कीन्हें नाहक ठठोलीमें। बेनी कवि कहे कछु कह तन बनैं दशा, दिना चार स्वांगसे दिखाय चले होहोली॥ बोलत न डोलत न खोलत न पलक हाय, काठसे पडेहैं आज काठकी खटोलीमें॥१॥

जब गोदानके पश्चात् ब्राह्मणको दक्षणा देनेका समय आया, तब सेठजीने पुत्रोंसे कहा कि, जो पैसे नोकरकी दस्तूरी के काटे हैं सो देदो। पुत्रोंने उत्तर दिया कि पिताजी दस्तूरी तो उसने नहीं काटी। बस इसके सुनतेही सेठजीने शीतमें आकर प्राण छोडदिये। दूसरे दिन वह गायभी मर-

गईं। यमदूत सेठजीको नरकयात्रा करानेकेवास्ते अपनी दृढ़-पाशोंसे बांधकर यमालयको लेगये। यमराज इनकी तरफ देख कुछेक हंसते हुये चित्रगुप्तजीसे बोले कि जरा आप इनके पाप पुन्यका हिसाब देख लीजिये। तब तो चित्रगुप्तजीने उत्तर दिया कि महाराज इनका क्या हिसाब देखें पापही पाप नामें की तरफलिखे जानेके अतिरिक्त लेशमात्रभी पुण्य जम्मानहीं है। बस इतनी कहनेकी देरथी, तब तो लालाजीके ऊपर यम-दण्डोंकी वर्षा होनेलगी। तब तो लालाजी चिल्लाकर बोले कि मुझे मतमारो। मैंने मरती समय एक गोदान कियाहै। गोदा-नका नामलेतेही चित्रगुप्तजी घबराकर बोले कि महाराज मेरा अपराध क्षमाहो। इसने अभी एक गौदान कियाहै, सो मैं रो-जनामचे मे से खातेमें लाना भूल गया था, परन्तु उसके पु-ण्यके पीछे वो गाय केवल दो दिनही जीवित रहीहै। इसका विचार आपकरलेवें। तब यमराजजी सेठजीसे बोले कि, यदि तैंने गौदान कियाहै तो वह गाय कहां हैं? इतना कहतेही वो गाय सेठजीके सन्मुख आकर खडी होगई। और बोली कि सेठजी मैं आपके पुण्यके पीछे एक दिनही जीती रहीहूं। सो एक दिनमें जो चाहिये सो काम लेलो। लालाजी बोले कि अच्छा एकहीदिन सही। अब पहिले तो इतनाकाम कर कि ये यमराजजी बैठे हैं इनके पेटमें एक सींग मार। हे माता!! तूं ही देख इन्होंने मुझे कितना कष्ट दियाहैं। सेठजीकी आज्ञा

पातेही वह गाय यमराजजीके पीछे हुई। यमराज सारी यमपुरीमें भागे भागे फिरे, परन्तु गाय और सेठजी यमराजाके पीछे मार मार करते चले जातेथे। तब हारके यमराज श्रीचक्रपाणी वैकुण्ठनाथ श्रीविष्णुभगवानके पास गये।

हे प्रियपाठकवर्गों! यहांपर प्रसङ्गानुकूल स्थल देखकर कुछ वैकुण्ठ लोकका वर्णन करतेहैं।

वैकुण्ठलोकका वर्णन

जिस वैकुण्ठमें सब पुरुष विष्णुभगवानके समान चतुर्भुज रूपहैं। जिस वैकुण्ठलोकमें आदिपुरुष शब्दमात्रके वक्ता त्रिगुण माया मृगीके नचानेवाले चक्रपाणी विष्णुभगवान बिराजते हैं। जिस वैकुण्ठमें "सुखदायक" नामक अति रमणीय बागहै जिसमें सब कामनाएं पूर्ण करनेवाले फल फूलोंसे शोभित सुन्दर कल्पवृक्ष वगैरह है। ऋतुओंकी शोभासे आठों याम प्रकाशित रहतेहैं। जिस वैकुण्ठमें श्रीमत् अखिल लोक लोकेश्वर श्रीविष्णुभगवानके पापनाशक चरित स्त्रियोंसहित भगवद्पार्शद विमानोंपर बैठे अति मधुर २ शब्दोंसे गायन करतेहैं। जिस वैकुण्ठलोककी नदियोंके जलमें प्रफुल्लित मधु मालतीकी लताओंकी सुगंधसे सारी पुरी सुगन्धित होरहीहै और करी, कपोत, कोकिला, सारस, हंस, चक्रवाक, मयूर, आदि सुन्दर पक्षी दिव्यरूपहैं और श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्दके गुण गाते रहते हैं। और कल्पवृक्ष कुन्दतिलकवृक्ष

रात्रिमें प्रकाश करनेवाले कमल चंपक (जिनको भवनमें रख-
नेसे मनुष्य कभी ऋणी नहीं होते हैं, जिनकी छाया पुरुषोंको
हस्तीके समान बलप्रदान करती है) सारा वैकुण्ठ पारिजात
आदि कल्पवृक्षोंसे शोभितहै। और श्रीमन्नारायण वैकुण्ठ-
नाथके चरणारविन्दोंमें मानों नमस्कार करते दिखाई देतेहैं।
मरकत वैदूर्य आदि सुवर्णमय विमानोंसे सारा वैकुण्ठ सघन
होरहाहै। श्रीलक्ष्मीजी चरणारविन्दमें नूपुरध्वनि करती हुई
लीलाकेलिये नीलकमल हस्तमें धारण किये हुये शोभितहैं।

हे प्रिय पाठको! आप इस पुस्तकद्वारा संक्षेप रीतिसे
वैकुण्ठके दर्शन करचुके आपकी भी वहां जानेकी उत्कण्ठा
हुई होगी। देखिये—जब एक दुष्ट कृपण पुरुषकोभी ऐसी
गायके पुण्य करनेसे वैकुंठ मिला, तो फिर यदि आप तन,
मन धनसे गौमाताजीकी सेवा करोगे, और बहुत दुग्ध देने-
वाली तरुण गायको दक्षिणासहित श्रेष्ठ ब्राह्मणको दानकरोगे,
तो क्या आपको वैकुण्ठलोक नहीं प्राप्त होगा? नहीं नहीं
क्यों नहीं? अवश्यमेव होवेहीगा!! इस विषयमें अनेक शास्त्रीय
प्रमाण पीछे देआयेहैं। अब यमराजजी और सेठजीका भी
वृत्तान्त सुनिये। जब बिचारे यमराजजी घबराये हुये, वै-
कुण्ठलोकमें जाकर श्रीविष्णुभगवानको प्रणाम कर बोले कि
हे भगवन्! यह वैश्य मेरे प्राणोंका गाहक हो रहाहै इसने
अपनी सारी उम्मरमें अनेक पापोंका उपार्जन करनेके अति-

रिक्त एक बूढी गौका दान दियाहै, और उसीसे यह त्रिलोकीका राज्य करना चाहताहै आप जैसी आज्ञा करैं वैसाही दण्ड इसे देदेवें ।

भगवान, अच्छा यमराजजी जैसा इसने कर्म कियाहै वैसाही इसको फल देदेना चाहिये ।

यमराज, महाराज कर्म तो इस दुष्टने घोर नर्कमे जानेका कियाहै ।

भगवान, तो अच्छा नर्कहीमें भेजदो । यह वात सुन सेठजी हंसते हुए बोले, कि महाराज मैंने चित्रगुप्त और यमराजजीका न्याय पहिलेही देखलिया अव आपके न्यायकी गति देखकर मुझे वडा आश्चर्य्य होताहै, कि आपभी पूरे न्यायी हैं । परन्तु आज आपने वेद, पुराण, शास्त्र, आदि सब झूटे करदिये । क्योंकि उनमें लिखाहै, कि जो पुरुष स्वप्नमेंभी भगवानका दर्शन करलेवे उसको वैकुण्ठवास मिलता है । पर मैंने साक्षात् दर्शन किया तो भी मुझे नरक ? यह क्या अन्याय?? अरी गाय इनसेभी समझ? यह वैश्यका बचन सुनकर भगवान हँसकर बोले कि गाय क्या समझेगी हमही समझगये कि तुम बडे चतुर हो अच्छा यमराजजी तुम जाओ, इनको हम अपनेही पास रक्खैंगे । वस यमराजजी इतनी बात सुनतेही अपना मुख लियेहुए यमलोकको पधारगये । अहाहा ! ऐसी वुड्ढी दुग्धहीन गायके पुण्य करनेसे वैश्यको

बैकुण्ठप्राप्ती, और जो लोग सैंकडों गायें उत्तमोत्तम पुण्य करते हैं उनको कितना पुण्य होगा? उसका हे परमेश्वर तुमही जानो? मनुष्यकी क्या सामर्थ्यहै? जो जानसके।

भजन

दया निधि तोरी गति लखिना परैं। आस्ताई। धनसें धरम धरमसें अधरम, अकरम करम करैं॥ दया०॥१॥ पिता बचन टारैं सो पापी, सो प्रल्हाद तरैं। ताके बंध छुडावनको प्रभु, नरसिंह रूप धरैं॥ दया०॥२॥ एक गऊ जो देत विप्रको, सो सुरलोक तरैं॥ दया०॥३॥ कोटि गऊ राजानृग दीन्ही, सो भवकूप परैं॥ दया०॥४॥

नरसिंह पुराण

"सदक्षिणां प्रदद्याद् गां, सोक्षय्यं सर्वमाप्नुवान्॥
गवि रोमाणि यावन्ति, प्रसूतिकुलसंस्थितः॥
तावन्त्यब्दानि वसति स्वर्गे दाता न संशयः"॥

अर्थात्—दक्षिणा सहित जो पुरुष गौका दान करताहै वह अपने सैंकडों पुरुषोंको नरकमेंसे निकालताहै और जितने गौके रोम होते हैं उतने वर्ष शरीर त्यागे पीछे गोदानप्रदाता स्वर्गमें बास करताहै।

हे प्रिय गोभक्तो! इसप्रकार अनेक प्रमाण इस विषयकेहैं, परन्तु एक तो विस्तार (स्थानाभावके) भयसे तथा विशेष पढनेका आप लोगोंको समय नहीं मिलनेके कारण, इतनेही

पर सन्तोष करतेहैं. क्योंकि कोईभी विषय क्यों न हो, जहां-तक उसके ऊपर एकाग्रचित्तके साथ लक्ष नहीं दिया जाता तो उसका सुनना, और पढना हस्तीके स्नान समान निरर्थकहै। इस पर एक उत्तम दृष्टान्त एक वैश्य और पण्डितका आपके भेट करताहूं. किसी नगरमें एक वैश्य रहताथा, जिनके कपडे (वस्त्र)का व्यापार था। उनका एक मित्रथा वह सदैव कथा सुननेकोजाया करताथा। एक दिन सेठजीकोभी बडी आग्रह केसाथ कथा सुननेको राजीकर लेगया। (सेठजीका कथापर तो विशेष प्रेम नहींथा, परन्तु यदि न जांय तो भी मित्र नाराज होंगे ऐसा बिचारकर अनिच्छा होतेभी किसीप्रकार गये) वहां-पर पण्डितजीनेभी विशेष स्वागतकिया कारण वह द्रव्यवान, और नयाही आसामीथा। इससे पण्डितजीने उनको अपने पासही बिठाये, और कथा प्रारंभकी। सेठजी बैठे बैठेही निद्रा देवीके चरण शरणमें प्राप्त होगये। तब स्वप्नमें क्या देखते हैं कि, कोई ग्राहक कपडा लेनेके वास्ते उनकी दुकानपर आया, परन्तु भाव ताव ठीक नहीं हुवा। इससे वह पीछा जानेलगा। सेठजीने देखा कि दुकानपर आयाहुआ ग्राहक पीछा जाता है। झट उसे बुलाकर बोले। भाई! लो आठ आनेगजही देना ऐसा कहते हुये पण्डितजीके उपवस्त्र (जो पास था) फाड डाला। इसपर जो मनुष्य कथा सुनरहेथे वे सेठजीको बोले कि क्या आप कथा सुनने आयेहैं या पण्डितजीके वस्त्र फाड-

नेको ? इतनेमें इनकी आंखे खुलगई। और लज्जामें आकर कुछ उत्तर न दे सके।

हे प्रियपाठकवर्गो ! हमें पूर्ण आशाहै, कि आपभी इस क्षणभंगुर देहका अभिमान न करैं. और उपरोक्त वैश्यके समान केवल वस्त्र बेचनेहीमें मग्न न रहकर उस परमपिता परमेश्वर का सदैव स्मरण करते रहैंगे।

श्लोकः—यावज्जीवो निवसति देहे, कुशलं तावत्
पृच्छति गेहे ॥ गतवति वायौ देहापाये,
भार्य्या बिभ्यति तस्मिन्काले ॥ १ ॥

अर्थात्—जबतक जीव देहमें रहताहै तभीतक ग्रहमें कुशल पूछतेहैं, प्राण वायू निकल जानेसे जब यह शरीर शवरूपमें परिणत होताहै तब भार्या अर्थात् निज विवाहिता स्त्री (जिसको तुम प्राणसेभी अधिक प्यारी समझतेहो, और हे प्राणप्यारी ! हे सर्वांगसुन्दरी ! हे सुमुखे ! हे जीवनाधार ! आदि उपमासे संबोधन करतेहो) वो भी उसको देखकर भयभीतहो अलग होजातीहै।

सचहै। जबतक पुरुषका चित्त उसके (ईश्वर) चरणोंमें लगा रहताहै तभीतकका समय साफल्यहै, अन्यथा यह शरीर मलमूत्रमयके अतिरिक्त ओर कुछ नहीं है।

कवित्त

आवत गलान जो बखान ज्यादाकरो, मादायह

मलमूत्र मज्जाकी सलीती है । कहै "पद्माकर" त्यों जरा जब भींजी आय, छीजीदिन रैन जैसे रेणुकाकी भींती है ॥ सीतापति रामके सनेह ब-सबीती जोपें, तोतो दिव्य देह यमयातनासे जी-ती है ॥ रीती रामनामसे रहीन यह काहूकाम, खारिज खराब हालखालकी खलीती है ॥ १ ॥

महाभारत शान्तिपर्व

वार्तिक—कोई महात्मा जलाशयमें (जलके मध्यभागमें) बैठेहुए योगाभ्यास कररहेथे, और उस बृहतजलाशयमें किसी धीमर (पारधी) ने मत्स्यादि जल जन्तुओंको पकडनेके लिये अपना जाल डाला अकस्मात् वे महात्माभी उस जालमें आ-गये, धीमरने एक तपस्वीको अपनी जालमें बन्धे हुए देख, उनसे अपना अपराध क्षमाकी प्रार्थनाकी, ऋषि उसको अ-भय देकर बोले कि इसमें तेरा कोई अपराध नहीं है । परन्तु अब मैं तेरा होगया क्योंकि तुझे इतना परिश्रम वृथाही हुवा, सो यदि तूं मुझे राजाके पास ले चलैं और वो मेरा मूल्य तुझे दे देवै तो मैं तेरे बन्धनसे छूट सकताहूं । निदान वे दोनों रा-जाकेपास गये और अपना अभिप्राय प्रगट किया । राजा इस अभियोगको सुनकर आश्चर्यमें हुआ और अपने मन्त्रिवर्गोंसे परामर्ष करके एकलक्ष सुवर्ण मुद्रा उस ऋषीके मूल्यका उ-चित समझ धीमरको देने लगा । परन्तु ऋषीने कहा कि यह

मूल्य मेरा नहीं होसकता, तब राजाने ५० लक्ष सुबर्ण मुद्रा देना स्वीकार किया, तथापि उस ऋषीका संतोष नहीं हुवा। अन्तमें राजाने ब्रह्मशापके भयसे अपने राज्यका अर्द्धभाग देना अङ्गीकार किया, तबभी ऋषी प्रसन्न न हुए।

हे प्रियपाठकगणों! आप इस विषयपर आश्चर्य न करना देखो? श्रीगोस्वामी तुलसीदासजी महाराज अपनी रामायणमें क्या लिखते हैं।

चौपाई—" इन्द्र कुलिश शिव शूलबिशाला। काल दण्ड हरिचक्र कराला॥ जे इनकर मारा नहिं मरहीं, बिप्ररोष पावकमें जरहीं॥१॥ सुरम हिसुर हरिजन अरु गाई॥ हमरे कुल इनपर न शुराई॥ बधे पाप अपकीरति हारे॥ मार तहीपां परिय तुम्हारे॥२॥ लक्ष्मणजीके बचन

देखो भागवत

श्लोकः—" विप्रा गावश्च ऋतवश्च हरिस्तनुः "

अर्थात्—विप्र, गाय, और वेद ये हरीकेही स्वरूपहै।

अतएव हे प्रिय पाठक गणों! राजा इनसे इतना भयभीतहोवे जिसमे कोई आश्चर्य नहीं है। निदान वहराजा ब्रह्मशापके भयसे व्याकुल हो अपने गुरूके पास जाके इस विषयकी प्रार्थनाकी, राजाको इसप्रकार अधीर देखके गुरुदेव बोले, कि हे पुत्र तुम जरासी बातमें इतना सोच करने लगगये,

अभी तुम शीघ्र जाकर उस ऋषीके मूल्यमें एक गो उस धीमर को दे दो। तब राजा अपने स्थानपर आये, और एक नवीन व्याई और अधिक दूध देनेवाली गौ मंगाकर उस महात्माजी-से बोले कि हे तपोधन आपके मूल्यमें यह गौ इस धीमरको दे-ताहूं, कहिये आप प्रसन्नहुए या नहीं। राज्यकर्म चारी मंत्री उ-पमन्त्री आदि जो उस समय वहापर उपस्थितथे सो, इस बात पर बडा आश्चर्य करने लगे कि जब अधाराज्यभी इस ऋषीके मूल्यकी तुलना न करसका तो फिर एक गौ से क्या होसकता है। कहाहै "जेहि मारुत गिरि मेरु उडाहीं, कहिय तूल केहि लेखेमाहीं" परन्तु उनका बिचार उलटाही हुआ। अर्थात् वे महात्मा केवल एक गौमाताही उस धीमरको दिलाकर राजा-को आशिर्वाद दे बनको चलेगये।

हे प्रियगोभक्तो! तनिक बिचार दृष्टिसे देखिये तो सही, कि जब लक्ष दशलक्ष कोटि दो कोटि तो क्या? किन्तु अर्द्धरा-ज्यके देनेसेभी इन ऋषीके तुल्यकी तुलना न होतेहुए केवल एक गोमाताजीसे होगई, तो इससे अधिक मैं आपको गौमा-ताजीके महात्म तथा गौ दानके विषयमें क्या प्रमाण दे सक-ता हूं. तथापि हे प्रियपाठको! गोमहात्म्यामृतपान करानेमें मेरी तृप्ती नहीं होती।

भविष्य पुराणान्तरगत (गोत्रिरात्रिवृत)

धर्मपुत्रराजा युधिष्ठिर श्रीकृष्णचन्द्रजीके प्रति पूछतेहैं कि हे भगवान्! आपने सर्व पापोंके नाशकरनेवाले अनेक वृत वि-

धान कहे है परन्तु अब कृपा करके ऐसा वृत मुझे बताइये कि जिस एक वृत मात्रहीके करनेसे मनुष्यको यावत् वृतोंका फल मिलजावे, और वह वृत सब वृतोंमें उत्तम होकर सर्व पापोंका नाश करनेवाला होवे । तब श्रीकृष्णभगवान बोले कि हे पाण्डवश्रेष्ठ ! तुम एकाग्रचित्त होकर सुनो, मैं तुह्मारे प्रति गोत्रिरात्रि वृत जो एक महावृत है ? उसका विधान कहताहूं जिसके करनेसे मनुष्योंको अभीष्ट फल मिलताहै । इस बिधानके करनेसे मनुष्यके जन्म जन्मान्तरोंके कियेहुए समस्तपापोंका नाश इसप्रकार होजाताहै कि जैसे अग्नीके संयोगसे रुईका समूह भस्महोजाताहै। कुरुक्षेत्रमें सूर्यग्रहणके समय सो १०० भार सुवर्ण दान करनेका जो पुण्य, चान्द्रायण वृत करनेका जो फल, अश्वमेधादि यज्ञोंका जो पुण्य और सहस्त्रोंवर्ष पर्यन्त घोर तपस्या करनेका जो पुण्य आदि अनेक महापुण्य केवल गोत्रिरात्रि वृत करनेसेहीं मनुष्यके हस्तगत होजाते हैं। यदि कोई स्त्री नियमपूर्वक गोत्रिरात्रि वृत करै तो सो जन्मतक विधवा न होवे । अपुत्री अथवा बन्ध्याभी हो तो उसकेभी इस वृतके प्रभावसे चक्रवर्ती पुत्र उत्पन्नहोताहै। यदि पुरुष करै तो वह निष्कंटक राज्य भोगै, और अन्तमें गोलोकबासी होवे । इसप्रकार श्रीकृष्णचन्द्रने राजा युधिष्ठिरके प्रति कहा.

यह वृत भाद्रपदमासके शुक्लपक्षकी त्रयोदशीको करना चाहिये । उसदिन ब्रह्मचर्य धारण कर, गौमाताजीकी पूजन

करना चाहिये; और संध्यासमयमें जब गौएं बनसे चरकेआवे तब इनकी परिक्रमा और स्तुतिकर गोमाताजीको खांडके अथवा गुडके लड्डू बनाकर देना (खिलाना) चाहिये ।

हे प्रियपाठकगणों ! गोत्रिरात्रिकी कथा और बिधि बहुत बडी है, यहांपर बिस्तार भयसे केवल उसकी फलश्रुतीही संक्षेपरूपसे लिखी है। यदि आप यह वृत करना चाहते हो तो किसी सुयोग्य पण्डित द्वारा कथा सुनिये और यथोक्त रीति पूर्वक व्रतका आचरणकरिये.

दोहा–जेहिं श्रुति गावत रैन दिन, वेद न पावत पार ॥
सोइ रघुनाथ सिया सहित, बन्दौं बारंबार ॥ १ ॥
लालबरन लालीलसे, लाल ललाट विशाल ॥
शत्रुदलन जनभय हरण, बन्दौं अंजनिलाल॥ २॥
अतिविचित्र यह ग्रन्थ है, देखहु सुनहु बिचारि ॥
बहुग्रन्थनको सार मत, यामें धरचो निहारि॥ ३॥
अब मैं बन्दौं गुरुचरण, जेहिं प्रसाद वरपाय ॥
प्रथमभाग पूरण कियो, भ्रातुनहित मन लाय॥ ५॥

॥ प्रथम भाग समाप्तः ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
पंडित श्रीधर शिवलालजी
"ज्ञानसागर" छापाखाना
मुंबई.

॥ श्रीः ॥

गोमाहात्म्यचन्द्रिका ।

द्वितीय भाग प्रारंभः ।

मङ्गलाचरणम्

सोरठा—ऋद्धि सिद्धि दातार, सिद्धिसदन वारण बदन॥
सुमरों बारम्बार, मदन कदनके लालको ॥ १ ॥
जयशिव आनंद कंद, भूतनाथ भवभय हरण॥
भक्ति विषय निर्द्वन्द, गौरवरण मङ्गलकरण॥ २॥

दोहा—मेरी भव बाधा हरो, राधा माधव सोय ॥
जातनकी झांईपरैं, श्याम हरितद्युति होय ॥ ३ ॥
हे मुकुन्द गोविन्द हरि, नंद नन्दन घनश्याम ॥
चरणशरणमोहिराखिये, कृपासिन्धुसुखधाम ४

सोरठा—जयब्रन्दावन चंद, श्रीमुकुन्द गोविन्द हरि ॥
नन्दनंदनसुखकन्द, कृपाकरहुजनजानिनिज॥
जयश्रीनन्दकुमार, जयजयजय श्रीराधिका ॥
ममउरकरहु बिहार, जयजय गोपीगोपसब॥ ६॥

दोहा—करुणा निधि करुणायतन, जयप्रभु जगदाधार॥
हरत भूमिको भार तुम, भक्त हेत तनुधार ॥ ७॥
कृष्ण चरण कोमल अमल, सकल सिद्धि दातार॥

तिनकीरज अज शीशधर, रचत भुवन दशचार॥

श्लोकः—कस्त्वं शूली मृगय भिषजं,नीलकण्ठः प्रियेहम्॥
केकामेकां कुरु पशुपतिर्नैव दृष्टे विषाणे ॥
स्थाणुर्मुग्धे न वदति तरुर्जीवितेशः शिवाया ॥
गच्छाटव्यामितिहतवचः पातुवश्चन्द्रमौलिः ।१।

अर्थ—एक समय त्रिपुरासुरमर्दन, सुरानन्दवर्द्धन,श्रीशिवजी पार्वतीजीके भवनपधारे, और पटमंगलदेख किंवाड खटखटाये। तब पार्वतीजीने कहा, कस्त्वं (तू कौनहै) शिवजीने कहा, (हे चन्द्रानने) मैं शूलीहूं (शूलीमहादेवका नामहै और शूल रोगका भी नामहै) तब पार्वतीजीने प्रसन्नरूपसे कहा कि, तुम रोगी हो तो औषधको ढूँढो। फिर शंकरने कहा मैं शूलरोगी नहीं हूं, किन्तु नीलकण्ठ (नीलकण्ठ शङ्करका नामहै दूसरे पक्षमें मयूरका नामहै) हूं। तब पार्वतीजीने कहा कि, यदि आप नीलकण्ठहैं तो एकाधा मयूरका शब्द तो सुनाइये। फिर शंकरने कहा मैं मयूर नहीं हूं, किन्तु पशु पति (शंकर दूसरे पक्षमें शृंगधारी बलयुक्त पशुओंकाराजा) हूं। फिर पार्वतीजीने कहा, यदि आप पशुपतिहै तो सींग क्यों नहींहै। फिर शंकरने कहा, कि मैं स्थाणू (शंकर दूसरे पक्षमें वृक्ष)हूं। तब पार्वतीजीने कहा। वृक्ष तो बोलतेही नहीं फिर आप कैसे बोलते हैं। शंकरने कहा। मैं वृक्ष नहीं किन्तु शिवाका जीवन (शिवा, पार्वती और दूसरे पक्षमें शियाल) हूं। तब पार्वतीने

कहा जो आप शिवाका जीवन (पति) हो तो बनमें जाकर शब्द करो। इस प्रकार पार्वतीके बचनोंसे निरुत्तर हुये थके सो ? शिवजी, वह आपलोगोंकी रक्षाकरो ।

॥ गौमाताजीकी स्तुती ॥

गैयामाता तुमको सुमरों, कीर्ति सबसे बडी तुम्हारी, करोपालना तुम लरिकनमें, पुरुषन देउ बैतरणि उतारी ॥ तुह्मरे दूध दहीकी महिमा, जानेदेव पितर सब कोय ॥ को असतुमबिन दूसर जिहिंके, गोबरलगे पवित्तर होय ॥ चारों जुगमे तेरी पूजा, साखी गावे वेद पुराण ॥ तुमरे नाते कहावे, श्रीगोपाल कृष्ण भगवान ॥ ४ ॥

प्रियपाठकवर्गो ! इसद्वितीयभागमें प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा श्रीगोमाताजीका महात्म दरशाते हैं। अर्थात् गोमाताजीके दूध दही गोमूत्र गोमय आदिपदार्थोंसेही कितने महारोगोंका नाशहोता है, और गोमाताजीके ही पुत्रों द्वारा अन्न उत्पन्न होताहै जिससे अपन इस साढेतीन हाथ देहका पालन करते हैं

यह बात आपखूब याद रक्खैं कि जितनी मनुष्यको सूर्य्य चन्द्रमा अग्नि जल वायू आदि पदार्थों की आवश्यकताहै उससेभी बढकर गोधनकी आवश्यकता है। देखिये ।

॥ राग भैरवी ॥

जाके दर्शतें पाप मिटतहैं, देवेजो पय अमृतधार ॥
जाके पिये बलबुद्धि बढतहैं, पीडा रोग नसावनहार॥१॥

देतीहै सुतजोबहुउपकारी, करतेहैंजोतुह्मराउपकार॥
हलमे चाले खेंचत गाडी, अरु खेंचतहै बहुभार॥२॥
गहरी नदी वेतरणी जिससे, करती है यहपार॥
फिर ऐसी गौमाताकीसेवा, करते क्यों न विचार॥३॥

हे प्रियगोभक्तो! अधिक क्या कहैं। गोमाताजीही, और उसके सन्तानही अपने सुख और संपत्तिका फल रूपहै। देखिये। सूखा घासचर (खाके) के अमृतवत् दूध देतीहै, और इस माताजीके सन्तान अर्थात् बैलोंहीके द्वारा कृषी होकर अन्न मिलताहै। बडे २ शकट अर्थात् गाडाओंको खैंचते है कि, जिनको घोडे, हाथी, आदि पशूभी खैंचनेमें असमर्थहै, उनको बैल सुगमताकेसाथ एक स्थानसे दूसरे स्थानको किंवा एक ग्रामसे दूसरे ग्रामको ले जातेहैं।

पहिले इस भारतवर्षमें जब रेल नहींथी, तब आपलोगोंके पुरुषा हजारोंमन बोझा सहस्रों कोसोंतक बैलोंहीके द्वारा ले जानेको समर्थ होतेथे, और अबभी जिसप्रान्तमें रेल नहीं है, वहां श्रीगौमाताजीके सन्तानों द्वाराही आपलोगोंका काम चलताहै। यदि कोई शङ्का करके प्रश्न करै कि—तुमने शास्त्रीय प्रमाण देकर जो गौका महात्म दरसायाहै, और गौमाताजीको भारतके यावत्धर्मोंकी खानि जगतमाता स्वर्गकी निसरनी आर्य्योंकी विजयपताका आदि (उपमा संयुक्त शब्दोंद्वारा) गौमाताजीकी प्रशंसाकी, सो तो ठीकहै, परन्तु इस

दुसरे भागमें गौओंके गुणोंका प्रत्यक्ष प्रमाण देनेका तुमने प्रणकियाहै सो तो कुछ दीजियेगा। और यदि गौको "गौमाताजी" कहैं तो भैंसकोभी भैंसमाता कहैं जिस्में क्या हानीहैं? क्योंकि प्रथम तो भैंस गायसे बडी होती है, और उसका मूल्यभी गायसे दूना चौगुना लगताहै तथा दुग्धभी गायसे अधिकही देतीहै ? तो, उसका समाधान (उत्तर) इसप्रकारहै. कि आप भैंसको गायसे उत्तम समझते हो तो बगुलेको चंद्रमा समझनेमें क्या हानीहै, क्योंकि वह शूभ्रहै और आकाश बिहारीहै,भैंसके अधिक दुग्धदेनेसे गायके बराबर नहीं हो सकती जब कि अनेकगुण बताये और आगेको प्रत्यक्षमाणादिकसे बताये जावैंगे तब मालुम होजावेगा कि भैंस माता होसकती है या नहीं। आप इस नीतिके बचनको जरापढकर समझिये.

श्लो०—उभौ पक्षौशुक्लौ दिविभुवि तथा वारितगतिः
सदा मीनान् भुङ्क्ते वसति सकल स्थाणुशिरसि ॥ बके सर्वश्चान्द्रो गुणसमुदयः किंचिदधिको गुणाः स्थाने मान्या न तु नरवर स्थानरहिताः ॥ १ ॥

अर्थात्—किसी कविका कथनहै कि चन्द्रमासेभी अधिक गुण बगुलेमें पायेजाते हैं। देखिये चन्द्रमा एक पक्षमें शुक्लहै और बगुलादोनोंही पक्षमें श्वेतहै। चन्द्रमाकीगति केवल आकाशहीमें चलनेकी है किन्तुबगुला आकाश और पृथ्वीपर

दोनोंजगें फिरनेकी शक्ति रखताहै । चन्द्रमा एक मासमें सवा दो दिनही मीनको भोगताहै,किन्तुबगुला आजन्मपर्यन्त मीनको भोगताहैं, चन्द्रमा केवल शंकरहीके ललाटपर बिराजताहै किन्तुबगुला समस्त स्थाणु, (वृक्ष)पर्वत, आदिके मस्तकोंपर निवास करताहै । इसप्रकार बगुलेमें चन्द्रमासेभी अधिक गुणहुए, परन्तु गुणोंका मान्य उत्तम स्थानपरही होताहै न की नीचस्थानमें धारण कियेहुए गुण माननीय होते हैं । इसी प्रकार गाय और भैंसमें बहुत अन्तरहै इसका पाठकगण स्वयं अनुमान करलेवें ।

हे प्रियपाठकगणों ! हमें पूर्ण आशाहै कि आप इस ऊपरके कहे श्लोकको पढकर स्वयं अनुमान करलेवें कि गौ भैंसमें पृथ्वी और आकाशका अन्तरहै । अब हम लेख बढनेके भयसे भैंसके अवगुणोंको न बताकर केवल गौमाताजीके गुणोंकोही प्रत्यक्ष प्रमाण द्वारा सिद्ध करते हैं, कि गोमाताको “ माता ” क्यों कहते हैं । आप एकाग्रतासे पढिये ।

माताका पुत्रकेसाथ क्या २ कर्तव्यहै सो बिचार पूर्वक देखनेसे यही प्रतीत होताहै कि पुत्रको प्रत्येक दशामें लालन पालन करनाही मुख्य कर्तव्यहै सो यह गुण गायके अतिरिक्त भैंसआदि किसी अन्यपशुमें नहीं पायेजातेहैं । क्योंकि गौमाताजी प्रत्येक दशामें बाल्यावस्थासे लेकर वृद्धापकाल पर्यन्त हमारी पालना मातृवत् करती हैं ।

हे प्रियपाठको! अब हम उन पदार्थोंको गुणोंसहित नीचे लिखते हैं। जिनसे गोमाताजी हमारी पालन करतीहै। यह विषय अभी थोडेही दिन पूर्व हिन्दीके सुप्रसिद्ध राजस्थान नामक अर्द्धसप्ताहिक समाचारपत्रमें प्रकाशितहो चुकेहै।

गो दुग्धके गुण (१)

सबसे प्रथम गौमाता हमको दुग्ध देती है जिसके श्रीमान धन्वन्तरीजी महाराज कहते है कि गोदुग्ध जीर्णज्वर, खांसी, शरीरका नित्य प्रति सूखते जाना; पेटमें गोला, व जलंधर आदि रोगोंका होना, अचेत होना, शरीरमें जलन होना, तृषा, की विशेषता, हृदयमें पीडा होना, शरीर पीतवर्ण होजाना, दस्तहोना, ववासीर, शूल, मलमूत्र,आदिके वेगोंके रोकनेसे उत्पन्न हुए रोग और अतिसार, योनिसम्बन्धी विविध प्रकारकी पीडा, व खुजली, वरजकी बेगता, न्यूनता आदि, गर्भका न ठहरना, मुखनासिका, गुदा, से रक्त गिरना, विना परिश्रम किये शरीरका थकित सा होजाना, इत्यादि उपरोक्त रोगोंको गोदुग्ध आरोग्य करता है, और, कायिक, बाचिक, मानसिक, पापकर्म गोदुग्ध सेवनसे नहीं होते। बलप्रद धातुवर्द्धक, और कामोत्साहक है, रसायन तथा आयुवर्द्धकभी है।

(१) यहांपे स्थानाभावसे गोदुग्ध, घृत, दधि, आदि पदार्थों का गुण केवल भाषा वार्तिकमें वर्णन कियाहै मूलश्लोक नहीं लिखेहै यदि आपको उपरोक्त पदार्थोंके गुणोंका प्रमाण देखना होतो, चरक, शुश्रुत, वागभट्ट, आदि वैद्यक ग्रंथोंमें देखें एवं गोरक्षाचार्य श्रीमान् जगतनाराणजी रचित समग्र पुस्तकोंसे, किंवा मेरे ज्येष्ठभ्राता श्रीमान शिवप्रकाशजी पोतदार कृत सुजन प्रकाशमें देखें।

नपुंसकता मिटाने और स्मरणशक्ती बढानेमें तो यही एक अद्वितीय पदार्थ है। गोदुग्ध विद्यार्थी, योगी, लेखक, न्यायाधीश, गणितज्ञ, चित्रकार, विज्ञानशास्त्रपाठी, (साइराइटरन्स) शिल्पविद्यानुरागी (इंजिनीयर) ऋषि, मुनि, इत्यादि जनोंकोभी लाभदायक है। इनके चित्त एकाग्र करने और मस्तिष्क परिश्रम करनेमें बडा कामदेता है। प्राचीनकालमें गोदुग्ध सेवनकरके हमारे ऋषि मुनि एक २ दो २ मासतक समाधी लगाया करतेथे। परन्तु साम्प्रतकालमें गोदुग्धके गुणोंको न जानकर आर्योंके जैसी संतान होती है वह कुछ आपसे अविदित नहीं है. यदि आप प्राचीन और नवीन आर्य्य बालकोंके गुण तथा उसके शरीरसंबंधमें क्या अन्तर है इस बातको जानना चाहते हो तो भारत सुप्रसिद्ध गोरक्षोपदेशक श्रीमान पण्डित जगतनारायणजीद्वारा संपादित सचित्र धर्मामृतपत्र मुंबईसे प्रकाशित होताहै उसे मंगाकर देखें।

मलाईके गुण।

मलाई वातरोग नाशकरनेवाली, तृप्तकरनेवाली, बलकारक, चिक्कण, मिष्ट, पाचनसमयमें मधुर, रक्तपित्त संबन्धी रोगोंको निवारणकरनेवाली, शरीरकी कांति बढानेवाली है।

मक्खनके गुण।

दूधसे उत्पन्नहुआ मक्खन उत्तम, चिक्कण, मधुर और अत्यन्त शीतल, देहको कोमल करता है, नेत्रोंको हितकारी,

संग्रहणीके रोगको रोकता है, रक्तपित्तसम्बन्धी रोगोंको तथा नेत्रके सर्वरोगोंको नाशकर शरीरको प्रफुल्लित करताहै।

दहीके गुण

गौका दही चिक्कण, पाचनसमयमें मिष्ट अग्निको दीप्त करताहै, बलवर्द्धक, वातनाशक, और रुचिको बढानेवाला है।

॥ दहीसे निकले मक्खनके गुण ॥

गो दहीसे निकला मक्खन जिसे लूनी भी कहतेहैं, पचनेमें हलकाहै, शरीरको सुन्दर (क्रांति) करताहै, मिष्ट, वकट्ठा, और किञ्चित खट्टा भी है, शीतल, तथा बुद्धिवर्द्धक, जठराग्निवर्द्धक हृदयको हितकारी, दस्तबेगको निवारक, और वात पित्तको नाश करताहै। बलवर्द्धक, दाहनाशक, खांसी, ऊम- और शरीरमें फोडा होजाना आदिरोगोंको नाश करताहै।

॥ गव्य अर्थात् गौकी छाछके गुण ॥

गव्यदहीसे बना जो तक्रहै, जिसको छाछ या मट्ठाभी कहते हैं यह त्रिदोष अर्थात् वात पित्त कफको शान्त करताहै। पथ्यमें श्रेष्ठ, अग्निवर्द्धक, रुचिवर्द्धक, तथा बुद्धिवर्द्धक, तथा जलंधर बवासिर आदि रोगोंको नाश करताहै।

॥ गोघृतके गुण ॥

गौका घृत मिष्टहै, तिक्ष्ण नहीं शीतलहै, पागलपन, उदर पीडा, शरीरका उष्णहोना, पेट फूलना, आदि रोगोंको, वात पित्तको शान्त करताहै। अग्निवर्द्धक, स्मरण शक्तिवर्द्धक, बुद्धि वर्द्धक, शरीरको कान्तियुक्त और सुन्दर करताहै। नेत्रोंको हितकारी व पापके जो रोगहै उसका हरण करता, तथा दरिद्र-

ताका नाश करताहै (अर्थात् रोगजनित होनेसे मनुष्य निरुद्यमी और दरिद्री होजाताहै सो घृत रोग नाशकहै) विष नाशकहै, संग्रहणी आदि रोगोंको नाश करताहै । पाचनसमयमें मधुर कामोत्पादकहै ।

हे प्रियपाठकवर्गो ! गौका घृत भी एक अपूर्व पदार्थहै, कि जिसके गुण और लाभ लिखनेमें इसी सदृश पुस्तक बनसक्ती है । अहा हा हा हा कैसाही षटरस पदार्थ, व निपुणपाक कर्ता हो, परन्तु घृत पाकशालामें न होनेसे स्वादु रहित और तमोगुणप्रद व्यंजन होंगे । सत्यहै "भोजनस्य घृतं सारं" भोजनका सारांश घी है यदि गो दुग्ध, दधि, घृतसे अपूर्व (अमृत) पदार्थ न होते तो आज हम सब उष्णदेशनिवासी (भारतवासी) मधुर रसीले अद्भुत अनोखे अतिस्वादिष्ट कोमल दिव्यभोजनोंसे जो रक्तवर्द्धक, शक्तिवर्द्धक, बुद्धिवर्द्धक, कान्तिकारक, धातुपुष्टक, मनोत्साहक, कामोत्तेजक, और आरोग्यप्रद पदार्थोंके लिये तरसते । अब गोमूत्र, गोमय, (गोबर) गौमय तैल, गोबर भस्म (राख) के गुण नीचे वरणन करतेहैं ।

॥ गोमूत्रके गुण ॥

गोमूत्र कटु, तीक्ष्ण, उष्ण, और क्षार गुणयुक्त होनेसे वातका नाश करताहै । पचनेसे हलका, और जठराग्नीको प्रदीप्त करताहै । बुद्धिवर्द्धक, पित्तकारक, कफ और वातका नाश करताहै । गोमूत्र कुछकाल सेवन करनेसे उदर संबन्धी

सब रोग, और अंजन करनेसे नेत्रसंबन्धी रोगनाश करताहै।

॥ गोमयके गुण ॥

गोमय अर्थात् गोबर पाकशाला, यज्ञशाला, और गृहादि सम्पूर्णस्थान इसके लेपनेसे शुद्ध व चित्त हर्षक होते है। गोमय औषधियोंके शोधनेमें और वर्रा (टांटिया) आदि अल्पविषयी जन्तुओंका विष नाश करनेमें उत्तम काम देताहै। इन्धन (बलीता) की जगह भी भारतवर्षमें उत्तम काम देताहै। दालबाटीका भोजन बनावें तो गोमयके इंधन (कण्डो) बिना बनानाही कठिनहै।गोमयके उपलों (कण्डो) के भोजनसंबंधी पदार्थोंके नीचे जलानेसे व तपानेसे विषवत वायू नहीं होती, और भोजन भी गुणकारी होताहै। ऋषिगणोंको तो गोबर महौषधीके तुल्य है। कैसाही बिगडा बंजर क्षेत्र (खेत) क्यों न हो इसका खात पडतेही भूमि सुधरके उपजाऊ होजाताहै, कि जिसमें अन्न, कन्द, मूल, फलादि अधिकतासे होकर मनुष्यमात्रका पोषण होताहै।

॥ गोमय तेलके गुण ॥

गोमयतेल याने गोबरकातेल। यह तैल यंत्रद्वारा निकलताहै। दाद, खाज, और छंजन, जिव्हामें कैसेही पुराने कैसे भी हो, मर्दन करनेसे निर्मल होजातेहैं।

॥ गोमयकी भस्मके गुण ॥

गोमयकी भस्म (राख) क्षारजलको भी मृदु करती है। दादके निवारणार्थ जो कुछ कालतक मर्दन करतारहे तो एक

अपूर्व परीक्षित महौषधी है। कांसी, पीतल,ताम्र, आदि धातुओंके झूठे और मैले वर्तनोंपर मर्दन करनेसे शुद्ध और उज्वल होजातेहैं। सीतपित्ती (पित्ती) इसी राखके मालससे मिटतीहै. विस्फोटक बिगडके शरीरमें रस्सी पडजातीहै, तो इसी राषके लगानेसे घाव भरताहै.

राजपूतानेमें इसको उक्तकाममें तथा गोवरकेसाथमें खातकी जगह अधिक काममें लाते हैं। धूम्रपान करनेवाले तथा हुक्का के प्रेमियोंका तो काम कंडेकी अग्निबिना चलनाही कठिनहै.

दूसरा एक बडा भारी गुण यहहै कि जो शैव (शिवभक्त) हैं वे इसकी भस्म ललाटपटमें लपेटतेहैं, और वह श्रीमहादेवजीके परमभक्त कहलाते हैं, तथा शंकर प्रसन्न होते हैं।

हे प्रियवर्गों ! हम गौको माताजी क्यों कहतेहैं, इस विषयका एक ऐसा प्रमाण देतेहैं, जिसको पढनेसे आप स्वयं समझ जाँयगें कि गौको माताजी कहतेहैं इसमें कोई आश्चर्य की वात नहीं है।

हम आर्य्यसन्तान श्रीगौमाताजीका जितना आदर और दयाकी दृष्टिसे देखें उतनाही थोडाहै। जव एक पुत्रके पालन करनेसे माताको मनुष्य "माता" कहते हैं, तब अहा हा हा एक गौसे ४५४४० मनुष्योंका पालन होताहै उसे माताकहें तो आश्चर्यही क्याहै ? यह हिसाव श्रीमत् "स्वामि दयानन्दजी सरस्वतीने" लगायाहै, इसवास्ते हम उन्हें हा-

र्दिक धन्यवाद देतेहैं। यद्यपि उक्त स्वामिजीके और हमारे (सनातनधर्मावलम्बियोंके) सिद्धान्तोंमें रातदिनका अन्तरहै तथापि श्रीगौमाताजीके ऊपर तो ? उनकी और हमारी भक्ती समानरूप होनेसे निस्सन्देह वे स्तुतिके पात्रहैं। क्यों न हो, जब कि किसी मनुष्यद्वारा एक गौकाभी तनिक उपकार, वा सेवा, होजानेसे वह धन्यवादका पात्र होताहै, तो फिर उक्त स्वामिजीने अपने जीवन समयमें अनेक गौशालाएं स्थापित करी, सहस्रों गौओंका उपकार कराकर, गौरक्षाके अनेक ग्रन्थ लिख अपने सदुपदेशद्वारा कई धनाढ्योंसे लक्षों रुपैये चन्देमें लेकर गौभक्तोंके हृदयमें अपना शुभचरित्र चिरकाल के लिये स्थापितकर गौलोकवासी हुएहैं। अतएव हम गोभक्तस्वामीजीको जितना धन्यवाददें, और मुक्तकण्ठसे जितनी प्रशंसाकरैं वेहे थोडीहै, और साथही पं० दुर्गाप्रसादजी, तथा गोगुहार पुस्तकके रचयिताकोभी धन्यवाद देतेहैं कि जिनकी पुस्तकसे हमने ये हिसाब उध्दृत कियाहै। वह हिसाब इस प्रकारहै कि—

यदि दो गौ, हो तो उनमेंसे एक कमसेकम दो सेर और दुसरी अधिकसे अधिक २० सेर दूध देतीहै। तो एक गौके दूधका पडता प्रतिदिन ११ सेर हुआ। तीसदिनके महीनेमें इस प्रकार उसका दूध ८॥ मनहोगा। यदि दो गौओंमें एक कमसे कम ६ और दूसरीको अधिकसे अधिक १८मासतक दूध देती

है तो एक गौके दूध देनेका पडता बारामासमें नन्यानवे मन दूध हुवा । यदि यह दूध प्रतिसे एक छटांक चांवल और डेढ छटांक चीनी (शक्कर) के साथ ओटाया जाय तो वह क्षीर अधिकसे अधिक एक मनुष्यके भोजनके लिये दो सेर समझ लियाजाय तो बहुत अच्छीतरहसे १९८० जनोंको सन्तुष्ट करनेमें भरपूर होगा । फिर समझिये, कि यदि एक गौ कमसे-कम आठवार, और दूसरी अधिकसे अधिक १८ वार अपने जीवन समयमें बच्चा दे तो प्रति गौको १३ बच्चेहुए, इस प्रकार एक गौ अपने जीवनमें २५७४० जनोंको भोजन देती है । १३ बच्चोंमें मानलीजिये कि ६ बछिया और ७ बछडे हों, तो उनमेभी मानलो कि एक रोगसे मरजाताहै तो १२ मनुष्योंके लाभ और सहायताके लिये बचे इस रीति करके जब एक गौसे २५७४० जनोंके भोजनके लिये दूध होताहै तो छ बच्चोंसे जब वे गौ होगी तब एकलाख चोपनहजार चारसो४० जनोंके भोजनका दूध होगा. फिर छै बच्चे बैल हुए और मान लियाजाय कि एक जोडी बैल इतनी धरतीको खोदताहै जिसमें २०० मन अन्न सालकी दोनों फसलोंमें उपजसके तो यह तीन जोडियां ६०० मन सालभरमें उत्पन्न करैंगे । यदि कमसेकम एक जोडा बैल आठवर्षतक भलीभांति काम करसकताहै तो वह तीन जोडे अपने जीवनभरमें ४८०० मन अन्न उत्पन्न करसकतेंहैं । जब एकमनुष्य तीन पाव अन्नसे सन्तुष्ट

होसकताहै, तो ४८०० मन अन्नमें दो लाख ५६ हजार मनुष्य एकवारमें भलीभांति भोजन करलेवेंगे। दूध और अन्नसे इसप्रकार सब मिलकर ४ लाख १० हजार ४ सो ४० जनोंका पेटभर सकता है। इस रीति यदि इनकी संतानके लाभका लेखा फैलाया जाय तो अगणित प्राणियोंका भोजन एक गौद्वारा होसकताहै।

श्रीमद्वाल्मीकी रामायण अयोध्याकाण्ड

अन्यदा किल धर्मज्ञा, सुरभिः सुरसंमता ॥
वहमानौ ददर्शोर्व्यां, पुत्रौ विगतचेतसौ ॥ १॥
तावर्द्धदिवसं श्रान्तौ, दृष्ट्वा पुत्रौ महीतले॥
रुरोद पुत्रशोकेन, बाष्पपर्याकुलेक्षणम् ॥ २ ॥
अधस्ताद्व्रजतस्तस्याः सुरराज्ञो महात्मनः ॥
बिन्दवः पतिता गात्रे सूक्ष्मा सुरभिगंधिनः ॥३॥
निरीक्षमाणस्तां शक्रो ददर्श सुरभिं स्थिताम् ॥
आकाशे विष्ठितां दीनां रुदतींभृशदुःखितां॥४॥
तां दृष्ट्वा शोकसंतप्तां वज्रपाणिर्यशस्विनीं ॥
इन्द्रः प्रांजलिरुद्विग्नः सुरराजोब्रवीद्वचः॥ ५ ॥
भयं कचिन्न चास्मासु कुताश्चिद्विद्यते महत् ॥
कुतोनिमित्तः शोकस्ते ब्रूहि सर्व हितैषिणि ॥६॥
एवमुक्ता तु सुरभिः सुरराजेन धीमता ॥
प्रत्युवाच ततो धीरा,वाक्यं वाक्यविशारदा॥७॥

श्रुतं पापं न वः किंचित्कुतश्चिदमराधिप ॥
अहं तु मग्नौ शोचामि स्वपुत्रौ विषमे स्थितौ॥८॥
एतौ दृष्ट्वा कृशौ दीनौ सूर्यरश्मिप्रतापितौ ॥
बध्यमानौ बलीवर्दौ कर्षकेण दुरात्मना ॥ ९ ॥
ममकायात्प्रसूतौ हि दुःखितौ भारपीडितौ ॥
यौ दृष्ट्वा परितप्येहं नास्ति पुत्रसमः प्रियः॥१०॥
यस्याः पुत्रसहस्रैस्तु कृत्स्नं व्याप्तमिदं जगत् ॥
तां दृष्ट्वा रुदतीं शक्रो न सुतान्मन्यते परम्॥११॥
इन्द्रोह्यश्रुनिपातं तं स्वगात्रे पुण्यगंधिनं ॥
सुरभिं मन्यते दृष्ट्वा भूयसीं तामिहेश्वरः ॥१२ ॥
समा प्रतिमवृत्ताया, लोकधारणकाम्यया ॥
श्रीमत्या गुणमुख्यायाः स्वभावपरिचेष्टया॥१३॥
यस्याः पुत्रसहस्राणि सापि शोचति कामधुक् ॥
किंपुनर्या विनारामं कौसल्या वर्तयिष्यति॥१४॥

भाषार्थ—किसीसमय देवताओंकी पूज्यमाता धर्मात्मा कामधेनूने अपने दोपुत्र (बैलोंको) हलमें जुतेहुए, धूपके मारे व्याकुलहुए, अचेत अवस्थामें देखा। जिनको जुते, पूरा दो प्रहर होगयाथा, और थकभी गयेथे, परन्तु कर्षकने तबतकभी उनको नहीं छोडाथा। कामधेनूको यह देख कर बडा शोक हुवा, और वह आंसू डाल डाल कर रुदन करनेलगी। उसीसमय महानुभाव देवराज (इन्द्रराज) जहां कामधेनू खडीथी

उसके नीचे होकरके मार्गसे जा रहेथे। जानेके समय उनके शरीरपर वह आंसू गिरे जिनमें कामधेनुकीसी गन्ध आती थी। आंसू अपने ऊपर पडतेही देवराजइन्द्रने ऊपरको नजर उठाई, तब देखा कि शुरभी आकाश (ऊंचे) में खडी रहकर दुःखके मारे व्याकुल हृदयसे रो रही है। वज्रपाणी देवराज-(इन्द्रने) यशस्विनी कामधेनुको इसप्रकार शोकसे सन्तप्त देखकर उदास हो, हाथ जोड बोले।

हे सर्वलोकोंके हितकरनेवाली कामधेनुमाता? कहो किसलिये रुदनकररही हो सो कहो? हम लोकोंपर तो किसी ओरसे कोई विपता नहींआईहै। बुद्धिमान देवराज वज्रपाणी (इन्द्रजी) ने जब इसप्रकार कहा; तब वाक्यविशारदा (बोलनेमें चतुर) श्रीकामधेनुने धीरजधर उत्तरदिया। हे देवराज आजकल राक्षसादिकोंका तो कोई खटका नहींहै,इनका पापतो कटगया, पर हम दुःखमें पड रहेहैं और अपने पुत्रोंका शोच कर रहीहूं, देखो यह दोनों बैल अतिदुर्बल होरहेहैं, तिसपरभी सूर्यकी किरणोंसे सन्तप्त होरहेहैं। दो पहर होगया पर तोभी उस दुष्ट किसानने अभीतक इनको नहीं छोडा और मारभी रहाहै। वे हमारी देहसे उत्पन्नहुएहैं, इसीकारण उनको दुखित और हलमें जुतनेके भारसे पीडित देखकर मारे शोकके नेत्रोंमेंसे जल गिरताहै। देखो संसारमें पुत्रोंकेसमान कोई प्यारा नहीं है। इसीप्रकारसे जब कि कामधेनुके हजारों लाखों पुत्र पृथिवीपर

हैं और वह उनकेलिये रो रहीहै तव यह देख इन्द्रने जाना कि यथार्थमें पुत्रकेसमान दूसरी कोई चीज प्यारी नहींहै । उनके शरीरपर कामधेनुके जो आंसू गिरेथे उनमेंसे अतिउत्तम सुगन्धि निकलती हुई देखके इन्द्रजीने जानलिया कि कामधेनु संसारमें सबसे श्रेष्ठहै । यद्यपि सुरभीके असंख्य पुत्रहै तथापि लोकके धारणाकी कामनासे व सरल स्वभाव पुत्रवत्सलतासे, इतना सोच किया, फिर असंख्यात पुत्र होनेपरभी सुरभीको अपने पुत्रोंको दुखित देख इतना सोच हुवा तब इकलौते पुत्रकी माता कौशल्याजी रामजीके विना किस प्रकार जीवन धारण करैगी ।

हे प्रिय पाठकवर्गो ! यह श्रीमद्वाल्मीकि रामायणान्तरगत इतिहासहै और उभय भाग(दोनोंभाग)का पूर्ण समर्थक है । प्रथम भागमें श्रीगौमाताजीकी सेवा, किंवा उन्हें तृण जल द्वारा संतुष्ट रखनेके विषयमें है । इसका प्रमाणभी इसी इतिहासमें हैं । अर्थात् जब कामधेनुने अपने पुत्र बैलोंको दुखित देख व्याकुल हृदय हो इतना शोक किया तो जब आप कामधेनुकी संतान अर्थात् गाय बैलोंकी तृण जल द्वारा सेवा करोगे तो क्या अभीष्ट फल नहीं देगी, नहीं? नहीं? अवश्यमेव देवेगी । क्योंके ईश्वरने इस माताजीका नाम कामधेनु (मनोकामना पूर्ण करनेवाली) रक्खाहै तो फिर क्या यह अपने नामको चरितार्थ नहीं करैगी । दूसरा प्रस्तुत भागमें

प्रत्यक्ष प्रमाण देनेका प्रणहै, सोभी इसी इतिहासमें स्पष्टतासे विदित होताहै, अर्थात् यह बात सर्व साधारणतक जानते हैं कि केवल इस माताजीके पुत्रोंही (बैलोंही) के द्वारा अन्न पैदा होताहै, और उसी अन्नसे अपन, अपने साढेतीन हाथ मनुष्य शरीरका भरण पोषण करतेहैं। यदि आज पृथ्विपर गौमाताजीके पुत्र (बैल) नहीं होते तो, अपनेकोभी यूरोप आदि अन्यप्रान्तोकी तरह हाथी, घोडे, आदिकोंसे खेतीकर घोर परिश्रम उठानेके अतिरिक्त सैंकडों रुपैये स्वाहा करने पडते।

उपसंहारमें श्रीयुत गोस्वामी श्रीतुलसीदासजीके कथनानुसार "बहुरि बन्दि खलगण सतिभाये, जे बिनुकाज दाहिने बांये" खल अथवा उन दुष्ट लोगोंकी बन्दना करताहूं जो दूसरेकी निन्दा एवं अपकार करनेमेही अपना गौरव समझतेहैं, और इसी कार्यमें धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष आदि चार पदार्थोंकी प्राप्ति मानतेहैं। जैसे चौपाई 'पर अकाज लगि तनु परिहरही, जिमि हिमउपल कृषी दलगिरहीं। बचन बज्रसम (तेहिं) सदा पियारा, सहस नयनपर दोष निहारा.' तदनुसार वे मेरे परिश्रमकी तरफ किंवा गौमाताजीके महात्मपर दृष्टि न देकर केवल छिद्रान्वेषणकर निन्दा करेंगे इस भयसे बारंबार प्रणाम कर प्रार्थना करताहूं।

सोरठा-

जयजय श्रीशिवनन्द, विघ्न विदारक सुखकरण
कीजे सर्व अनन्द, द्वितिय भाग पूरणभयउ॥१॥
सारदको सिर नाय, बार बार बन्दन करों ॥
लिखी अनुग्रह पाय, मतिअनुसारहि चन्द्रिका॥२
सबविधि सुखदे ईश, गौमाताके भक्तको ॥
दे अशीश जगदीश, यहलघु ग्रन्थ प्रचारहो॥३॥
गो द्विज सेवकजान, वैश्य बंश शिव भक्तहैं ॥
नामपुनीतहि मान, श्रीहरसामलहै सदा॥ ४॥
नाराण ममनाम, तिनको लघु प्रिय पुत्रमैं॥
रतललामहिधाम, गोभक्तनको दास यह॥ ५॥
निजमतिके अनुसार लिख्यो ग्रन्थ गोभक्तहित॥
महिमाअमितअपार, गोहित गोजन लिखसके६
विक्रम संवतजान, उन्नीसो अठवन्नको ॥
ग्रंन्थपूर्ण भो मान, पौषकृष्ण गुरु दूजको॥ ७॥

समाप्तम् ।

श्रीयुतशेठ हरसायमलजी पोतदारात्मज

नारायण पोतदार (रतलाम.)

मान्यवर विद्यारसिकगणों ! जरा एक बेर इसे भी तो पढ लीजिये कि किस प्रकार.

धमार्थ काम मोक्ष साधनके अमूल्य रत्न थोडे मूल्यमे जारहेहै.

"साम वेदीय नित्यकर्म दर्पण"–जिसमें प्रातःस्मरण शौच, दन्तधावन, स्नान विधि, स्नानांगतर्पण, भस्म धारण, त्रिकालसंध्या, तर्पण, देवपूजन, बलिवैश्वदेव, भोजनविधि, आदि कई उपयोगी बातें हैं मूल्य केवल ३ आने मात्र डा० व्य० माफ.

"संवत्सर फल दीपिका" यह ज्योतिष संबंधी ग्रन्थ समग्र व्यापारियोंके अधिक लाभका है इसमें ग्रह योगायोग, वृष्टि विचार ग्रह वक्र, उदय, अस्त, वार, संक्रान्ति, धनुष, तारा, नक्षत्र आदि सब बातें सरल कवितामें लिखीगई है इससे पाठक कितना लाभ उठा सकते हैं. यह पढनेहीसे मालूम होगा मूल्य ४ आना मात्र डा० व्य० माफ.

"रोटी पंचक" इसके गुण नामहीसे झलक रहेहैं. मूल्य १ आना डा० व्य० सहित.

"मृत्यु सभा प्रहसन" जिसमें सब नशोंकी हानि इस ढंगसे बताई गई हैं कि यदि पढनेपर चित्त प्रसन्न न हो और शिक्षा न मिले तो दाम वापस मूल्य २॥ आना मात्र.

"वर्ण प्रदीपिका" यदि छोटे २ बालकोंको वर्णज्ञान भलिभांति करना हो तो इसे जरूर पढावे. मूल्य २॥ आना डा० व्य० सहित.

"बाल बोध व्याकरण" व्याकरण विषय गहन होनेके कारण हम झूठी बडाई हांकना नहीं चाहते हैं, केवल इतनाही कहते हैं कि एक बेर ध्यान पूर्वक पढनेसे मालूम होगा कितना श्रम करके सार निकालाहै । कई मान्यवरोने तो की हमने इसे उत्तम जान अपनी २

पाठशालाओंमें इसको रक्खाहै, तथा प्रसिद्ध २ पत्रसंपादकोंनेभी प्रशंसा की है मूल्य केवल २॥ आना. डा० व्य० सहित.

" कलि प्रपंच पचीसी " इसमें कलियुगकी लीला कवितामें खूब झलकाई है. मूल्य १॥ आना.

" प्रेमलतिका " जरा एक बेर पढ तो लिजिये देखें आपके हृदयमें प्रेमकी लता उत्पन्न होकर गोद्विज हितकारी, वृन्दावनविहारि श्रीराधेश्यामके पदपङ्कज परागमे लोटपोट होकर भक्तिज्ञान वैराग्यके द्वारा शान्तिलाभपाते हैं या नहीं? यह ग्रंथ संस्कृत श्लोकबद्ध और भाषानुवाद सहितहै मूल्य ३ आना.

" बालोद्वाहमीमांसा " इसमे क्या होगा सो लिखनेकी अवश्यकताहीनही क्योंकि बचपनोंमे विवाह करनेसे अनेक हानियां होती है यह सब जानते हैं पर किन २ कारणोंसे वे इससे उत्तम जानते हैं उसका समाधान तथा किस २ अवस्थामें क्या २ काम करना उचितहै तथा नहीं करनेसे धर्म लोप होकर संसारिक पारमार्थिक कौन २ हानियां होती हैं आदि अनेक बातोंका मानो फोटो खींचा है मूल संस्कृत और भाषानुवाद सहितहै मूल्य ४ आना मात्र.

इसके अतिरिक्त अनेक छोटी २ पुस्तके तयार होरही है और भी कई पुस्तके मुंबईके प्रसिद्ध प्रेसोंकी हिन्दी संस्कृत अनेक पुस्तकों तथा श्रीधर शिवलालजीका असल चंडूपंचांगभी हमारे पास मिलतेहै जबाबी पत्र आनेसे उत्तर दिया जायगा।

आपका कृपाकांक्षी,

कवि हेतुरामात्मज मदनराज शर्मा.

सेन्ट्रल कालेज हिन्दी टीचर

(रतलाम.)

श्रीराधामाधव.

महाशय पाठकगणों, आपकी सेवामें मैंभी एक (यह) विनयपत्रिका
सो आशाहै कि आपका अमूल्य समय व्यतीत करनेका बिचार न करके इसको प
बरतमान समयमें शेखावाटीपे भगवानकी पूर्ण कृपा पाई जाती है क्योंकि यह
महाशयोंमे भाग्यवान अधिक पाये जातेहैं व्यापारमें बडी हिम्मत रखते हैं. मुंबई,
आसाम तक दिशावरोंमे जा जा के इन महाशयोंने भारी मारी धंदा रोजगा
कमर बांधी है. और पुन्य, धर्म, भगवतका स्मरण गोब्राह्मणकी सेवामें रुचि रखते
कठिन कलिकालमें भी स्वधर्मका पालन करते है अतः इन्होंको मैं धन्यवाद देता
इसी शेखावाटीमें बिसाहु नामके शहरमें श्रीमान शेठ जोरावरमलजी-
लजी बडे प्रतापी हुये. इनकी संपूर्ण सुकीर्ति लिखनेसे एक पुस्तक बनसक्ती है
भावसे नही लिखके इतनाही कहता हूं कि सहस्त्रों भूदेवोंने लक्सों रुपैये इनके
है. धर्मशालायें मंदिर सदावर्त वगैरह उत्तम उत्तम कार्य किये है इन्होंके पुन्य
इनके घराना (कुल) में जो उत्पन्न होते है सो भी धर्मात्माही होके अपने बडे
रीतिमें चलते है उदाहर्ण लीजिये कि इन गोमहात्मचंद्रिकाके रचियता श्रीयुत
श्रीमान शेठ हरसहायमलजीके पुत्रहै सो इन्होंका कैसा कोमल हृदय और स्वा
सो यह पुस्तकही आप महाशयोंको कहैगी तो मेरे कहनेकी कोई अवश्यकता नह
हाशयने अपना अमूल्य समय व्यय करके लोकोपकारार्थ यह पुस्तक बनाई व
हित पुस्तक मेरेपास भेजके छपवाई और पुस्तकका संपूर्ण अधिकार देदिया कि
आप कहैंगे कि इसमें परोपकार क्याहै ? सो यहहै कि अपने स्वदेश बंधु
कियेहै कि यह गउ क्या पदार्थहै. इस माताका स्वरूप ज्ञानमान बुद्धिमान पुरु
स्वार्थी मनुष्योंको नहीं है. च्यार आनाका घास पानी देके छे आनाका दूधकी
हैं और जहांतक बच्चे जनती हैं तहांतक घासपानी देते है फिर वृद्धापकाल
सहाल छोडके भूखे मारतेहै मैंने नेत्रोंसे देखाहै कि वृद्ध गायें उठने बैठनेकी
जंगलमें पैर पछाडा करती है. जिसके नेत्र कौवे कुचर डालते है जंबुक ग
काट काटके घोर दुर्दशाके साथ नोंच नोंचके मारते है कोई दयावान मनुष्य
निकलें तो नेत्रमे जल भरके बाडके कांटोंसे उसका सरीर ढकताहै परंतु
पीठके फिरातेही फिर उन कांटोंको दुष्ट जानवर हटाके उसका प्राण लेतेहैं
व्योंको बिचारना चाहिये कि, इसमें घोर अधर्महै. देखिये दयावान हमारी र
गवर्नमेंटने भी अबोल प्राणियोंके लिये दया देखके कैसे कायदे निकालेहै बु
तथा लंगडे या घाववालेको गाडीमें नहीं जोडने देते है. कायदेसे विरुद्ध जो
लादतेहै उसे दंड मिलताहै । और बैल तथा घोडेको निर्दयतासे मारताहै
देते है निर्दई लोग फूंका देके दूध दुहतेहैं जिन्होंसे अनेकबार दंड लियाहै
कारको धन्यवाद देवें जहांतक थोडाहै. परंतु हमारे देसमें इन बातोंका बिल
है. कहावतही ऐसी कठोर कहतेहै कि जिस्कों लिखनेमें रोमांच होताहै सो व

ने वहलको कुल्हाडेसे नाथै) कहनेवालोंका तात्पर्य यहहै कि अपनी वस्तुको अपने
आवे सो करै. परंतु कहनेवालोंकी भारी भूलहै. अपनी वस्तु तो माता, पिता, स्त्री,
सबही है तो उनके साथ न होनेवाला कार्य कब कर सकोगे अपनीही स्त्रीको आप
वोगे तो न दे सकोगे क्योंकि अपने मस्तकपर न्याय परायण गवर्नमेंटहै. तो इन अ-
णियोंका दुख अपने २ धनियो (मालको) को समझना चाहिये इनकी दयाके रख-
होगा, यश होगा. इस गौ जैसे अमुल्य पदार्थको समजना चाहिये कि अपने बडे २
ने शास्त्रोंमें क्या कहाहै जो मनुष्य हमारे शास्त्रोंको नहि मानतेहै तो उन महाश-
गका ग्रहण करना तो अवश्य चाहिये मेरे ग्राममें १ मनुष्यको उदर विकार होके
उदर इतना बढा कि पानीकी भरीहुई मसकसमान होके असक्त होगया. वैद्य और
ने अनेक यत्न किया परंतु अच्छा न हुआ वह १ घरमें गरीबथा सो पासके पैसे
होगया घरकेभी दुखी होके उसकी सहाल छोडदी तो, उसने गोमूत्रमें अजवान
ा सुरु किया तो दिनभर दिन आराम होके नैरोग्य हुआ जिसके मूत्रमें इस प्र-
ाहै और गोवरभी काममें आताहै अर्थात् श्रष्टसे श्रष्ट वस्तु संसारमे मल मूत्रको
तो १ वोभी जिसके उत्तमसे उत्तमहै तो और दृष्टांत आप लोगों देना बाकीही क्याहै
ात्मा, बुद्धिवान पुरुषोंको तो कहनाही क्याहै वो तो स्वयं इस गोमाताका प्रभा-
ाहै परंतु न जाननेवालोंको यह पुस्तक उत्तम प्रकारकी शिक्षा देनेवाली है प्राचीन
कवेश्वर महाशयने श्रीयुत अकबर बादशाहके हुजुरमें एक कवित्त* कहा था सो
के हृदयमें दया प्रवेश होगई तो, श्रीयुत शेठ नारायणजीने तो यह अनेक श्लोक
की पुस्तकही बनाके आप लोगोंके सेवामें अर्पण की है तो क्या आप लोगोंके
उत्पन्न क्यों न होगी अवश्यही होगी यह गौ १ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों
नाहै अब इस भूमिका को समाप्त करके पाठक महाशयोंसे विनय करताहूं कि
क या अनुचित शब्दहो उसकी क्षमा मेरी लघुबुद्धि समजके करै.

**ारिहु दंत तृण धरैं, ताहि नहि मारत कोई। हम प्रतिदिन तृण
रै, बचन उचरैं दीन होई॥ अमृत पय नित स्रवहि, बत्स नहि
धर्म जिआवहि। हिंदुहिं मधुरन दहिं, कटुक तुरकहि न पिआवहि॥
कह नरहरि सुनु शाहवर, बिनवत गौ जोरे करन। केहि गुनाह
ोहि मारहीं, मुये चाम सेवत चरन॥**

*हमें तिनका (तृण) लेलेवे तो उसको नहीं मारते सो हमतो रातदिन तृण मुंहसे
न बोलतीहैं, हमारे स्तनोंमें अमृतरूपी दूध बहताहै, हमारे बच्चे आप लोगोंकी
ाहै रातदिन आपको सवारी देतेहै खंदेपे वजन ढोतेहै खेतीमें इन्हींके श्रमसे ल-
निपजताहै. हम हिंदुओंको दूध मीठा देके १ मुसलमानोंको कडवा नहीं देतीहै १
देतीहै.

हरिजी गायकी तरफसे वकील होके शाहसे अरज करतेहै कि हे शाह गौ आपसे
ी कररहीहै कि हमको किस गुनाहसे मारतेहै. हमारे मरजाने बादभी हमारी
ोंकी सेवाकरतीहै अर्थात अनेक वस्तुएं चर्मकी होतीहै.

पाठकोंका शुभचिंतक, **पं० किसनलाल.**